विकास जागृति

जनवरी 2025

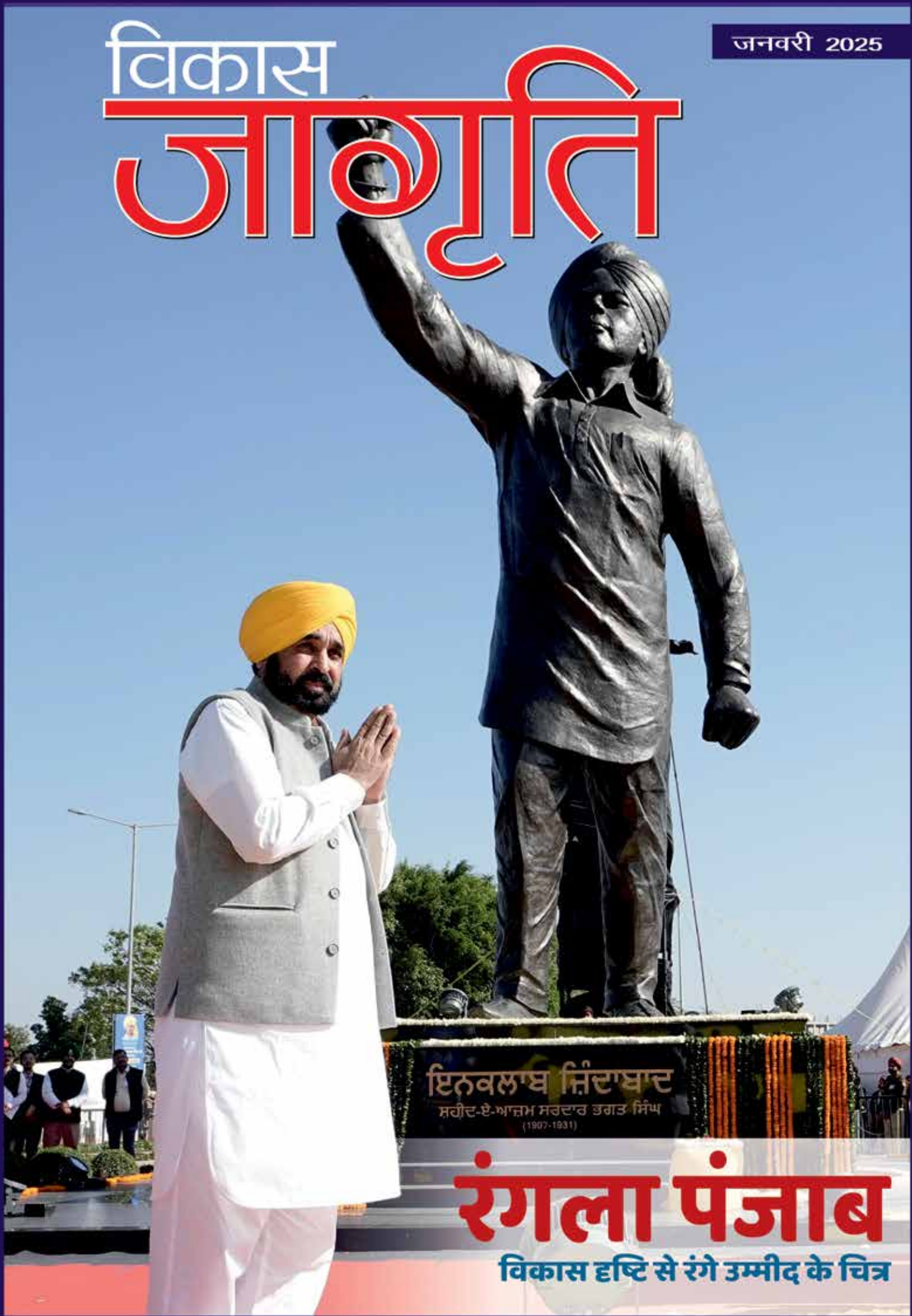

रंगला पंजाब

विकास दृष्टि से रंगे उम्मीद के चित्र

जन्म दिवस श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी
(6 जनवरी)

पंजाब सरकार

द्वारा

मुख्यमंत्री

भगवंत सिंह मान

के नेतृत्व में

आप सभी को

क्रिसमस

के ख़ुशियों भरे त्योहार की

हार्दिक शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के व्हाट्सऐप चैनल से जुड़ें

सूचना एवं लोक संपर्क विभाग, पंजाब

भगवंत सिंह मान
मुख्यमंत्री, पंजाब

विकास जागृति

संपर्क करने हेतु पता:
विकास जागृति, कमरा न. 1, पांचवी मंजिल, पंजाब सिविल सचिवालय, चण्डीगढ़ 160001
दूरभाष: 0172–2740668
ई–मेल: punmagazine2020@gmail.com

सी.ई.ओ.	–	विमल कुमार सेतिया (आई.ए.एस.)
उप निदेशक	–	मनविंदर सिंह
संपादक	–	एन.डी. शर्मा
डिज़ाइनर	–	कर्ण कुमार
प्रकाशक	–	सूचना एवं लोक संपर्क विभाग, पंजाब

पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रगट किए गए विचारों से पंजाब सरकार, संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं। संपादक को किसी भी रचना को काटने–छांटने या रद्द करने का पूरा अधिकार है। किसी भी विवाद की स्थिति में अदालती कार्यवाही चण्डीगढ़ की अदालतों में ही मान्य होगी।

प्रकाशक एवं संपादक विमल कुमार सेतिया (आई.ए.एस.) द्वारा सूचना एवं लोक संपर्क वि. भाग, पंजाब के लिए कमरा नंबर 1, पांचवी मंजिल, पंजाब सिविल सचिवालय, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया। विकास जागृति पत्रिका का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना है। पत्रिका में इस्तेमाल किए गए कई चित्र निदेर्शी प्रयोजनों के लिए हैं। पंजाब सरकार पत्रिका में हुई किसी भी गलतबयानी या पत्रिका के कारण उपजे किसी भ्रम के लिए उत्तरदायी नहीं है।

जनवरी - 2025

वर्ष - 12 अंक - 1

इस अंक में

06

पंजाब विज़न 2025: प्रगति, विकास और समृद्धि का प्रतीक

14

स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र को सुदृढ़ करना हमारी प्राथमिकता

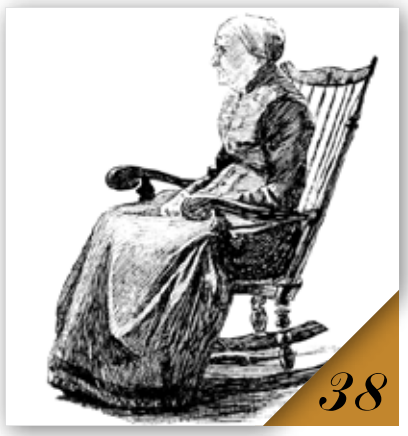

38

गुडिया

46

रामानंद सागर: एक बहुमुखी प्रतिभा

12 मोहाली और अमृतसर एयरपोर्ट से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की वकालत
15 सरकार की खेलों के लिए विभिन्न विकास पहल
16 पंजाब सरकार का शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम
18 पंजाब के सभी जिलों में बन रही युद्ध स्मारकों की रूपरेखा को सिद्धांतिक मंजूरी
19 मुख्यमंत्री ने अबोहर निवासियों को 119.16 करोड़ रुपये का तोहफा दिया
20 दिव्यांग व्यक्तियों के कल्याण को सुनिश्चित करने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई
21 मोहाली सिविल अस्पताल में उन्नत रक्त घटक पृथक्करण इकाई का किया उद्घाटन
22 बटाला में नई अपग्रेडेड चीनी मिल को लोगों को की समर्पित
24 शिक्षा मंत्री हरजोत सिंह बैंस ने "शिक्षकों से संवाद" कार्यक्रम के तहत फाजिल्का के अध्यापकों से की बातचीत
28 लोहड़ी का त्यौहार
30 भूजल संरक्षण की राह दिखाता पंजाब
32 लोककवि : जवन चीज में रस आवे, उहे कविताई
34 उसने कहा था
41 स्वाधीनता संग्राम के जनक मंगल पांडे
42 गहरी नींद लें और स्वस्थ रहें
44 औली
45 गणतंत्र दिवस
48 ऐसे बहुत से शायर हैं, जिनका दूसरा मिसरा इतना मशहूर हुआ कि लोग पहले मिसरे को तो भूल ही गये। ऐसे ही चन्द उदाहरण यहाँ पेश हैं
50 पलटू की शैतानियां

पंजाब विज़न 2025
प्रगति, विकास और समृद्धि का प्रतीक

जागृती ब्यूरो

पंजाब 2025 की ओर आत्मविश्वास के साथ बढ़ते हुए समग्र विकास और जनकल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित कर रहा है। 2024 राज्य के लिए परिवर्तनकारी वर्ष रहा, जिसमें स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और बुनियादी ढांचे जैसे प्रमुख क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई।

स्वास्थ्य क्रांति: एक स्वस्थ पंजाब की ओर

पंजाब सरकार ने गुणवत्तापूर्ण और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं को अपनी विकास योजना का आधार बनाया है। 2024 में राज्य के स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार की दिशा में कई क्रांतिकारी कदम उठाए गए।

आधुनिक चिकित्सा बुनियादी ढांचा

पंजाब ने संगरूर, होशियारपुर और मलेरकोटला जैसे

स्थानों पर पाँच नए मेडिकल कॉलेजों का निर्माण शुरू किया, जो 2025 तक 1,000 से अधिक एमबीबीएस सीटें जोड़ने और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य पेशेवरों की कमी को पूरा करने के लिए स्थापित किए जा रहे हैं।

टाटा मेमोरियल अस्पताल जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के सहयोग से विशेष कैंसर देखभाल इकाइयों की स्थापना ने जानलेवा बीमारियों से लड़ाई को और मजबूत बनाया। साथ ही, नए जिला अस्पतालों को उन्नत निदान उपकरणों से लैस किया गया।

एआई-संचालित स्वास्थ्य पहल

पंजाब ने स्वास्थ्य क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) अपनाने में अग्रणी भूमिका निभाई। दस जिलों में शुरू की गई एक पायलट परियोजना ने टीबी का पता लगाने के लिए एआई का उपयोग किया, जिससे निदान की सटीकता और दक्षता में वृद्धि हुई। अब इस तकनीक को मधुमेह और हृदय रोग जैसी अन्य बीमारियों के लिए भी विस्तारित किया जा रहा है।

सभी के लिए सस्ती स्वास्थ्य सेवाएँ

सरबत सेहत बीमा योजना के तहत 2024 में 15 लाख अतिरिक्त परिवारों को शामिल किया गया, जिससे राज्य की 85% से अधिक आबादी को कैशलेस इलाज की सुविधा मिली। 881 आम आदमी क्लीनिक ने कमजोर वर्गों को मुफ्त परामर्श और दवाइयाँ प्रदान कीं।

शिक्षा में बदलाव: अगली पीढ़ी को सशक्त बनाना

शिक्षा पंजाब विज़न 2025 की आधारशिला है। 2024 में राज्य ने समावेशिता, डिजिटल शिक्षा और कौशल विकास पर केंद्रित अनेक पहल शुरू कीं।

एमिनेंस स्कूल

2024 में 118 सरकारी स्कूलों को स्कूल्स ऑफ एमिनेंस के तहत उत्कृष्टता केंद्रों में बदल दिया गया। इनमें स्मार्ट क्लासरूम, उन्नत प्रयोगशालाएँ और मेंटरशिप प्रोग्राम शामिल हैं, जो छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं।

कौशल-आधारित शिक्षा

सरकार ने वैश्विक टेक कंपनियों के साथ साझेदारी कर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स और कोडिंग जैसे कौशल-आधारित कार्यक्रम शुरू किए। इन कार्यक्रमों से 2 लाख से अधिक छात्रों को लाभ हुआ।

समावेशी शिक्षा

लुधियाना और अमृतसर में पहली बार ट्रांसजेंडर स्कूल

स्थापित किए गए, जो विशेष पाठ्यक्रम और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

फ्री डिजिटल एक्सेस

गरीब परिवारों के छात्रों को 10 लाख टैबलेट वितरित किए गए और स्कूलों और कॉलेजों के पास 5,000 फ्री वाई-फाई ज़ोन स्थापित किए गए। इस पहल का उद्देश्य डिजिटल विभाजन को समाप्त करना और छात्रों को ऑनलाइन संसाधनों तक पहुंच प्रदान करना है।

रोजगार के अवसर: सपनों को साकार करना

रोजगार सृजन और उद्यमिता को बढ़ावा देना पंजाब के विकास का मुख्य आधार रहा है। 2024 में सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाने के लिए कई योजनाएँ लागू कीं।

भर्ती अभियान

स्वास्थ्य, शिक्षा और पुलिस विभाग में 50,000 रिक्तियों को भरने का सबसे बड़ा अभियान चलाया गया, जिससे हज़ारों परिवारों को वित्तीय स्थिरता प्राप्त हुई और सार्वजनिक सेवाओं को मजबूत किया गया।

स्टार्टअप पंजाब

मोहाली और लुधियाना में इनक्यूबेशन केंद्र स्थापित किए गए, जिन्होंने 500 से अधिक स्टार्टअप को वित्तपोषण और मार्गदर्शन प्रदान किया।

महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना

शेबिज़ पंजाब योजना के तहत ₹5 लाख तक के बिना ब्याज वाले ऋण दिए गए, जिससे 10,000 से अधिक महिला उद्यमियों को लाभ हुआ।

सड़क सुरक्षा बल: सुरक्षित सड़कों की ओर एक कदम

2024 में सड़क सुरक्षा बल (SSF) ने सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु दर को 47.65% तक कम करने के लिए प्रौद्योगिकी आधारित निगरानी और सामुदायिक भागीदारी का उपयोग किया।

मुख्य उपलब्धियाँ

1. विशेष इकाइयों की तैनाती: गति कैमरों, ब्रीथ एनालाइज़र्स और एआई-आधारित ट्रैफिक निगरानी प्रणालियों से लैस।

2. जागरूकता अभियान: स्कूलों और ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क सुरक्षा कार्यक्रम।

3. पेट्रोलिंग: दुर्घटना-प्रवण क्षेत्रों में एसएसएफ कर्मियों

की तैनाती।

4. डाटा-आधारित समाधान: 100 से अधिक खतरनाक सड़क खंडों का पुनर्निर्माण।

5. सामुदायिक भागीदारी: ट्रकिंग संघों और टैक्सी यूनियनों को शामिल करना।

नवीकरणीय ऊर्जा और पर्यावरणीय सततता

पंजाब ने 2024 में 500 मेगावाट सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित की और सरकारी भवनों में सोलर पैनल अनिवार्य कर दिए। इसके साथ ही, 1 करोड़ से अधिक पेड़ लगाए गए और 50 तालाबों को पुनर्जीवित किया गया।

आगे का रास्ता: पंजाब विज़न 2025

पंजाब 2025 की ओर बढ़ते हुए न केवल अपने लोगों के सपनों को साकार कर रहा है, बल्कि एक ऐसा राज्य भी बना रहा है जो आधुनिकता और पारंपरिक मूल्यों का मेल हो। पंजाब विज़न 2025 सिर्फ एक नीति दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि एक वादा है—एक प्रगतिशील, समृद्ध और समावेशी राज्य बनाने का।

औद्योगिक विकास

मुंबई में आयोजित इन्वेस्ट पंजाब समिट ने अक्षय ऊर्जा, फार्मास्युटिकल्स, और आईटी जैसे क्षेत्रों में ₹20,000 करोड़ के निवेश आकर्षित किए। इन निवेशों से अगले दो वर्षों में 1 लाख से अधिक रोजगार सृजित होने की संभावना है, जो पंजाब को एक व्यवसाय-अनुकूल राज्य के रूप में मजबूत करेगा।

बुनियादी ढांचा विकास: समृद्धि का मार्ग

स्थायी विकास के लिए एक मजबूत बुनियादी ढांचा आवश्यक है। पंजाब सरकार ने अपनी विजन 2025 योजना के तहत कनेक्टिविटी और शहरी विकास में बड़े पैमाने पर निवेश किया है।

सड़क और रेल संपर्क

पंजाब स्मार्ट मोबिलिटी प्रोजेक्ट के तहत, 2024 में 1,000 किलोमीटर से अधिक सड़कों को अपग्रेड किया गया, जिससे यात्रा का समय कम हुआ और व्यापार को बढ़ावा मिला।

भारतीय रेलवे के साथ साझेदारी में, अमृतसर, लुधियाना, और चंडीगढ़ को जोड़ने वाली अर्ध-उच्च गति ट्रेनों की

शुरुआत हुई, जिससे राज्य के भीतर संपर्क में सुधार हुआ।

शहरी नवीकरण

अमृतसर और लुधियाना में स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 2024 में उल्लेखनीय प्रगति हुई।

बुद्धिमान यातायात प्रबंधन प्रणाली, कचरे से ऊर्जा उत्पन्न करने वाले संयंत्र, और हरित सार्वजनिक स्थान विकसित किए गए, जिससे शहरी निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ।

सस्ती आवास योजना

अपना घर योजना के तहत 2024 में 50,000 सस्ते घर कम आय वाले परिवारों को दिए गए।

ये घर सौर पैनल और वर्षा जल संचयन प्रणालियों से सुसज्जित हैं, जो सामर्थ्य और स्थिरता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

सतत विकास: हरित पंजाब

स्वच्छ ऊर्जा क्रांति

2024 में 500 मेगावाट की सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित कर, पंजाब नवीकरणीय ऊर्जा में अग्रणी बनकर उभरा।

सभी नए सरकारी भवनों के लिए छतों पर सौर पैनल अनिवार्य कर दिए गए, जो पर्यावरण-अनुकूल बुनियादी ढांचे का उदाहरण है।

वनरोपण अभियान

पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए, राज्य भर में 1 करोड़ से अधिक पेड़ लगाए गए, जिससे हरित क्षेत्र में 5% की वृद्धि हुई।

इस अभियान ने वायु गुणवत्ता सुधारने और मरुस्थलीकरण रोकने में अहम योगदान दिया।

जल प्रबंधन

जल संकट का समाधान करने के लिए, सरकार ने 50 नदियों और तालाबों के पुनर्जीवन का महत्वाकांक्षी कार्यक्रम शुरू किया।

किसानों के बीच ड्रिप सिंचाई जैसी उन्नत तकनीकों को बढ़ावा दिया गया, जिससे पानी की बर्बादी कम हुई।

2024 की उपलब्धियों ने एक ऐसे भविष्य की नींव रखी है, जहां स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ हैं, शिक्षा समावेशी है, रोजगार प्रचुर मात्रा में है, और विकास सतत है।

अपने लोगों को हर पहल का केंद्र बनाकर, पंजाब न केवल बुनियादी ढांचा बना रहा है बल्कि सपनों और आकांक्षाओं को भी पोषित कर रहा है।

विजन 2025 केवल एक नीति दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि एक वादा है—पंजाब को एक ऐसा आदर्श राज्य बनाने का, जो परंपरा और आधुनिकता, प्रगति और स्थिरता, और विकास और समानता का अनूठा संगम है।

सुरक्षित पंजाब के पहिए पर

सड़क सुरक्षा बल 2025 तक पंजाब को सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में एक आदर्श राज्य बनाने के लिए प्रयासरत है। इसके मुख्य लक्ष्यों में शामिल हैं:

1. मृत्यु दर में 50% की कमी

सख्त कानून लागू करके और सड़क बुनियादी ढांचे में सुधार करके सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को आधा करने का लक्ष्य।

2. स्मार्ट ट्रैफिक प्रबंधन

सभी प्रमुख शहरों में स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम का विस्तार, जिससे यातायात सुचारू और सुरक्षित हो सके।

3. सुदृढ़ बुनियादी ढांचा

लोक निर्माण विभाग के साथ मिलकर पैदल चलने वालों के लिए अनुकूल फुटपाथ, साइकिल ट्रैक और सुरक्षित क्रॉसिंग का निर्माण।

4. युवाओं की भागीदारी

स्कूलों और कॉलेजों में राज्यव्यापी सड़क सुरक्षा क्लब शुरू करना, ताकि युवाओं में कम उम्र से ही सुरक्षित ड्राइविंग की आदतें विकसित की जा सकें।

5. रीयल-टाइम मॉनिटरिंग

पंजाब के उभरते स्मार्ट शहरों के साथ सड़क सुरक्षा बल के संचालन को जोड़ना, ताकि ए आई और आई ओ टी तकनीकों के माध्यम से वास्तविक समय पर निगरानी और यातायात प्रबंधन किया जा सके।

पंजाब का सड़क सुरक्षा बल एक बदलाव का प्रतीक है, जो राज्य की सड़कों पर सुरक्षा और जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देता है। 2024 में केंद्रित कदमों और 2025 के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के साथ, पंजाब उस भविष्य की ओर बढ़ रहा है जहां हर यात्रा सुरक्षित होगी।

मोहाली और अमृतसर एयरपोर्ट से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की वकालत

जागृती ब्यूरो

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने अमृतसर में वरिष्ठ अकाली नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल पर हुए हमले को तुरंत नाकाम करने के लिए पंजाब पुलिस की सराहना की, जिन्होंने राज्य को बदनाम करने की गहरी साजिश को सफल नहीं होने दिया।

आज यहां 'निशान-ए-इंकलाब' प्लाजा को समर्पित करने के मौके पर पत्रकारों से बात करते हुए मुख्यमंत्री ने इस हमले की कड़े शब्दों में निंदा की। उन्होंने कहा कि श्री हरमंदिर साहिब जैसे पवित्र स्थान पर ऐसे घृणित कृत्य के लिए कोई स्थान नहीं है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य सरकार ने किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के अलावा करीब 175 पुलिसकर्मियों को पहले से ही तैनात किया हुआ है। उन्होंने कहा कि इसका सकारात्मक परिणाम निकला क्योंकि पंजाब पुलिस ने श्री हरमंदिर साहिब के आसपास कड़ी निगरानी करते हुए राज्य को बदनाम करने की साजिश को नाकाम कर दिया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वह पूरी घटना पर लगातार नजर बनाए हुए हैं और पुलिस अधिकारियों को समाज विरोधी तत्वों के खिलाफ अधिक सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं। भगवंत सिंह मान ने कहा कि उन्होंने पहले ही डीजीपी को इस मामले की गहराई से जांच करने के निर्देश दे दिए हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब महान गुरुओं, पीरों-फकीरों, संतों-महापुरुषों और शहीदों की भूमि है, जो हमेशा ही सांप्रदायिक सौहार्द और आपसी मेलजोल के लिए एक मिसाल रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य में शांति और सद्भाव बनाए रखना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है और सरकार किसी को भी इस तरह की हरकत करने की इजाजत नहीं देगी।

शहीद भगत सिंह एयरपोर्ट, मोहाली और श्री गुरु रामदास एयरपोर्ट, अमृतसर से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों की शुरुआत के लिए जोर देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि विदेश जाने वाले पंजाबियों के समय, पैसे और ऊर्जा की बचत करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि इन दोनों एयरपोर्ट्स पर अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के टेकऑफ और लैंडिंग की सुविधा के लिए बुनियादी ढांचे की जरूरत है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए ठोस प्रयास कर रही है कि अंतरराष्ट्रीय उड़ानें जल्द शुरू हों। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य सरकार देश-विदेश में बसे पंजाबियों की सुविधा के लिए इस कार्य में कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्र को सुदृढ़ करना हमारी प्राथमिकता

जागृती ब्यूरो

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य सरकार शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्रों में सुधार को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है।

मुख्यमंत्री ने बुढलाडा में सब-डिविजनल अस्पताल का निरीक्षण करते हुए कहा कि इस दौरे का उद्देश्य कमियां निकालना नहीं, बल्कि सरकारी अस्पतालों की सुविधाओं को और बेहतर बनाना है। उन्होंने कहा कि राज्य के लोगों ने पहली बार देखा है कि राज्य का कोई मुख्यमंत्री सरकारी कार्यालयों और अस्पतालों का दौरा कर रहा है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इसका उद्देश्य केवल यह सुनिश्चित करना है कि राज्य की जनता को हर प्रकार की नागरिक-केन्द्रित सेवाएं प्रदान की जाएं।

मुख्यमंत्री ने बताया कि पिछले दो वर्षों में स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्रों में व्यापक बदलाव हुए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य के स्वास्थ्य क्षेत्र में बड़े पैमाने पर सुधार हुआ है और सरकारी अस्पतालों में आधुनिक मशीनें व उपकरण लगाए गए हैं। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य के सभी सरकारी अस्पतालों में दवाएं मुफ्त उपलब्ध कराई जा रही हैं।

मुख्यमंत्री ने समाज के हर वर्ग की भलाई सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि सरकारी खजाने का हर एक पैसा राज्य की प्रगति और जनता की समृद्धि के लिए समझदारी से खर्च किया जा रहा है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य हर क्षेत्र में बेमिसाल विकास और तरक्की के नए युग का साक्षी है और कहा कि पिछले दो वर्षों से अधिक समय में नए युग की शुरुआत हुई है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि एसएएस नगर (मोहाली), कपूरथला, संगरूर, होशियारपुर और मालेरकोटला में नए मेडिकल कॉलेजों का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इन कॉलेजों और अस्पतालों का उद्देश्य पंजाब को देशभर में मेडिकल शिक्षा का केंद्र बनाना है, जिससे राज्य के निवासियों को भी लाभ होगा। भगवंत सिंह मान ने उम्मीद जताई कि मेडिकल शिक्षा की पढ़ाई करने की इच्छुक विद्यार्थियों को इन मेडिकल कालेजों में बुनियादी शिक्षा प्रदान की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार पंजाब में मेडिकल स्टाफ, खासकर डॉक्टरों, नर्सों और सफाई कर्मचारियों की कमी को दूर करने के लिए गंभीर प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि इस कदम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि राज्य के निवासियों को इन संस्थानों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं मिलें। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इस नेक कार्य के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी जाएगी और हर संभव प्रयास किया जाएगा।

इससे पहले मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्हें बुढलाडा के प्रसिद्ध आईटीआई की खराब स्थिति के बारे में जानकर बहुत दुख हुआ है और उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि एक सप्ताह के भीतर इस संस्थान के पुनरुत्थान के लिए मास्टर प्लान तैयार किया जाए। उन्होंने कहा कि संस्थान में छात्रों और युवाओं को विश्वस्तरीय पाठ्यक्रम प्रदान किए जाएं ताकि उन्हें स्वरोजगार के अवसर मिल सकें। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इससे राज्य में औद्योगिक घरानों की जरूरतों के अनुसार कुशल कर्मियों का एक पूल तैयार करने में मदद मिलेगी।

सरकार की खेलों के लिए विभिन्न विकास पहल

जागृती ब्यूरो

पंजाब में खेलों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बड़ी पहल करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने आज 'पंजाब राज्य (डेवलेपमेंट व प्रमोशन ऑफ स्पोर्ट्स) अधिनियम, 2024' को लागू करने की स्वीकृति दी। इसके साथ ही, पंजाब इस अधिनियम को लागू करने वाला देश का पहला राज्य बन गया है।

यहां खेल विभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य राज्य में खेलों के विकास के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनाए जाने वाले अच्छे तौर-तरीकों को अपनाना और खिलाड़ियों के निष्पक्ष चयन को सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि यह एक्ट खेल एसोसिएशनों के कामकाज में पारदर्शिता लाने के लिए कानूनी ढांचा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इससे उन खिलाड़ियों के निष्पक्ष चयन को भी सुनिश्चित किया जाएगा, जो जिला स्तर पर अपने क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करेंगे या राष्ट्रीय स्तर पर अपने राज्य और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस एक्ट से खेल एसोसिएशनों द्वारा सरकारी धन का सही उपयोग सुनिश्चित करने में भी मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस एक्ट के तहत प्रत्येक जिले में एक विशेष खेल के लिए जिला एसोसिएशन का पंजीकरण किया जाएगा। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इस एक्ट के अनुसार खातों की देखरेख अनिवार्य रूप से चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा की जाएगी और सभी खर्चों और आय के स्रोतों का वार्षिक विवरण 31 मई से पहले प्रकाशित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दस्तावेज़ और खाते इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में खेल निदेशक, पंजाब सरकार को उपलब्ध कराए जाएंगे। उन्होंने कहा कि एक पांच सदस्यीय समिति का गठन किया जाएगा, जिसमें महासचिव, दो वरिष्ठ कोच और दो प्रतिष्ठित खिलाड़ी शामिल होंगे। यह कमेटी जिले या राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए टीमों/खिलाड़ियों का चयन करेगी। भगवंत सिंह मान ने कहा कि डिप्टी कमिश्नर/प्रबंधकीय सचिव की अध्यक्षता में गठित विवाद निवारण कमेटी खिलाड़ियों की अपील का निपटारा सात दिनों के भीतर करेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जिला मजिस्ट्रेट द्वारा जिला स्तर पर पांच सदस्यीय यौन उत्पीड़न कमेटी को अधिसूचित किया जाएगा, जिसमें खेल एसोसिएशनों की कार्यकारी कमेटियों के तीन महिला और दो पुरुष सदस्य शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि खेल विभाग के प्रबंधकीय सचिव द्वारा राज्य स्तर पर पांच सदस्यीय कमेटी को अधिसूचित किया जाएगा, जिसमें राज्य खेल संघों की कार्यकारी कमेटियों के सदस्य शामिल होंगे। भगवंत सिंह मान ने कहा कि ये कमेटियां किसी भी घटना की स्थिति में स्वत: संज्ञान ले सकती हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एक्ट के अनुसार सभी एसोसिएशन खेल गतिविधियों जैसे कैंप, लीग और प्रतियोगिताएं आयोजित करने के लिए एक वार्षिक कैलेंडर तैयार करेंगे और इसे हर साल 31 मार्च तक अपनी वेबसाइट पर अपलोड करेंगे। उन्होंने कहा कि खेल विभाग द्वारा 30 दिनों के भीतर कैलेंडर को अंतिम रूप दिया जाएगा। भगवंत सिंह मान ने उम्मीद जताई कि यह नीति राज्य में खेलों और खेल गतिविधियों को बड़ा प्रोत्साहन देगी, जिससे युवाओं की असीम ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाया जा सकेगा।

फिनलैंड से लौटे शिक्षकों की ओर से कौशल प्रशिक्षण

पंजाब सरकार का शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम

जागृती ब्यूरो

विश्व स्तरीय शैक्षणिक प्रशिक्षण प्राप्त कर फिनलैंड से लौटे बी.पी.ई.ओ., सी.एच.टी., एच.टी. और प्राइमरी/एलीमेंट्री शिक्षकों समेत 72 सदस्यों के दल ने पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान का हृदय से धन्यवाद करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए उन्हें एक नया अनुभव मिला है, जिससे राज्य की शिक्षा प्रणाली का स्तर और ऊंचा होगा।

लुधियाना के मनमीत सिंह ने मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान कहा कि फिनलैंड के दौरे से उन्होंने विद्यार्थियों को पढ़ाने के मनोरंजक तरीकों और तकनीकों के बारे में सीखा है, जबकि पहले पारंपरिक विधियों का ही उपयोग कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वे इस अनुभव को अन्य शिक्षकों के साथ भी साझा कर रहे हैं।

बठिंडा के एक अन्य शिक्षक, दलजीत सिंह ने बताया कि फिनलैंड की एक प्रशिक्षक क्रिस्टीना ने पंजाब सरकार की इस पहल की सराहना की है। उन्होंने कहा कि उन्होंने पंचायत और अन्य शिक्षकों के साथ भी अपना अनुभव साझा किया है, जिससे उनमें जबरदस्त उत्साह है।

इस अवसर पर तलवाड़ा के अमरिंदरपाल सिंह ढिल्लों ने कहा कि इस अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने जिम्मेदारी की वास्तविक भावना को समझा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के दूरदर्शी निर्णय से शिक्षा के क्षेत्र में जमीनी स्तर पर क्रांतिकारी बदलाव की शुरुआत होगी।

फतेहगढ़ साहिब की प्राइमरी शिक्षिका बलजीत कौर परमार ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि इस अवसर ने उन्हें आरामदायक माहौल से बाहर निकलकर खुद को नए युग में ढालने

का मौका दिया। उन्होंने कहा कि इस अनुभव ने उन्हें हर मंच पर खुलकर अपने विचार व्यक्त करने का आत्मविश्वास दिया है।

तरनतारन के अनुप सिंह मैणी ने कहा कि प्रशिक्षण के बाद उनका दृष्टिकोण पूरी तरह बदल गया है। उन्होंने कहा कि वे फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं, जहां शिक्षण के अन्य तरीकों के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाता है।

लुधियाना के मनप्रीत सिंह ने कहा कि फिनलैंड की शिक्षा क्रांति सरकार की मजबूत इच्छाशक्ति का परिणाम है। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार के दृढ़ संकल्प के कारण राज्य में भी शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव हो रहे हैं। उन्होंने इस दूरदर्शी निर्णय के लिए मुख्यमंत्री को बधाई दी।

होशियारपुर की शिक्षिका वंदना हीन ने कहा कि यह उनके लिए मनोरंजक तकनीकों के साथ प्रशिक्षण प्राप्त करने का नया अनुभव था, जो आज के समय की जरूरत भी है। उन्होंने विदेश जाकर प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर देने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

तरन तारन की निर्मलजीत कौर ने कहा कि यह पहली बार था जब प्राइमरी स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने समय के महत्व और उसके कुशल उपयोग के बारे में जाना। अब वे विद्यार्थियों को भी इन नैतिक मूल्यों की शिक्षा देंगे।

पटियाला की आंचल सिंगला ने कहा कि राज्य का प्राइमरी और प्री-प्राइमरी पाठ्यक्रम फिनलैंड के समान ही है, लेकिन वहां विद्यार्थियों को पढ़ाने के तरीके अधिक व्यावहारिक और आनंददायक हैं। उन्होंने कहा कि वे बहुत खुश हैं कि राज्य सरकार ने उन्हें विदेश जाकर प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया।

एस.ए.एस. नगर की वंदना ने कहा कि फिनलैंड की शिक्षा प्रणाली क्रांतिकारी है, क्योंकि चौथी कक्षा के विद्यार्थियों को भी व्यापारिक कौशल सिखाए जाते हैं, और वे ट्रेडमार्क और फूड लाइसेंस के बारे में अच्छी जानकारी रखते हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री के प्रयासों के कारण इस अद्वितीय अनुभव को प्राप्त करने का मौका मिलने पर आभार व्यक्त किया।

पटियाला के गुरप्रीत सिंह ने कहा कि राज्य सरकार ने उन्हें यह प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर देकर एक मिसाल कायम की है, जो उनके सर्वांगीण विकास के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

इस अवसर पर एस.सी.ई.आर.टी. की निदेशक अमनिंदर कौर बराड़ ने टीम की सराहना करते हुए पढ़ाने के जोश को बनाए रखने और कक्षाओं के बीच नियमित अंतराल की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने व्यावहारिक शिक्षा की आवश्यकता को उजागर करते हुए कहा कि प्रत्येक स्कूल की पहुंच बढ़ईगिरी और अन्य कार्यशालाओं तक होनी चाहिए। इसके अलावा श्रीमती बराड़ ने विद्यार्थियों को विभिन्न उपकरण प्रदान करने की भी वकालत की, जिससे वे थ्योरी के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल भी प्राप्त कर सकें।

पंजाब के सभी जिलों में बन रही युद्ध स्मारकों की रूपरेखा को सिद्धांतिक मंजूरी

जागृती ब्यूरो

देश की सेवा कर रहे बहादुर सैनिकों के सम्मान में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने सामान्य परिस्थितियों में जान गंवाने (फिजिकल कैज़ुअलिटी) वाले सशस्त्र बलों के 86 जवानों के लिए 21.50 करोड़ रुपए (प्रति सैनिक 25 लाख रुपए) की एक्स-ग्रेसिया को मंजूरी दी।

यहां अपनी सरकारी आवास पर आज सुबह बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री नेअधिकारियों को इन बहादुर सैनिकों के महान योगदान के सम्मान में पहली बार उनकी सरकार द्वारा शुरू की गई इस एक्स-ग्रेसिया राशि को तुरंत जारी करने के आदेश दिए। उन्होंने कहा कि इससे पहले ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी, लेकिन उनकी सरकार ने यह पहल की है क्योंकि ये बहादुर योद्धा ड्यूटी के दौरान जान का नुकसान उठाते हैं। भगवंत सिंह मान ने कहा कि पंजाब देश का एकमात्र ऐसा राज्य है, जिसने सामान्य परिस्थितियों में जान गंवाने वाले सैनिकों के परिवारों को 25 लाख रुपए एक्स-ग्रेसिया के रूप में दिए हैं। उन्होंने कहा कि यह राशि देश के 70 फीसदी अन्य राज्यों द्वारा शहीद सैनिकों के परिवारों को दी जाने वाली एक्स-ग्रेसिया से भी अधिक है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पद संभालने के बाद उनकी सरकार ने वतन के लिए इन नायकों द्वारा ड्यूटी के दौरान दी गई महान कुर्बानियों के सम्मान में परिवारों को एक-एक करोड़ रुपए देने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का यह छोटा सा प्रयास देश की एकता, अखंडता और प्रभुसत्ता को बनाए रखने के लिए हमारे सैनिकों के महत्वपूर्ण योगदान के प्रति सम्मान को दर्शाता है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि शहीदों के परिवारों को वित्तीय सहायता देना राज्य सरकार द्वारा सैनिकों और उनके परिवारों की भलाई सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता का प्रगटावा करता है।

एक अन्य मामले पर चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने सैनिक स्कूल कपूरथला की कायाकल्प करने और इसकी उचित देख-रेख को सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता को दोहराया। उन्होंने कहा कि 190 एकड़ क्षेत्र में फैला यह स्कूल बहुत ही खूबसूरती से तैयार की गई धरोहर इमारत में स्थित है और राज्य सरकार इसकी देख-रेख के लिए प्रतिबद्ध है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि उन्होंने इस मुद्दे को पहले ही भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के सामने उठाया है, जो स्कूल के प्रबंधन की देख-रेख कर रहा है।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने राज्य के युद्ध नायकों के सम्मान में हर जिले में युद्ध स्मारक बनाने की मंजूरी दे दी है। उन्होंने कहा कि ये अत्याधुनिक स्मारक 1-1.5 एकड़ क्षेत्र में बनाए जाएंगे, जो युद्ध नायकों को उचित श्रद्धांजलि देंगे। भगवंत सिंह मान ने इन युद्ध स्मारकों के डिज़ाइन को पंजाब भर के सभी जिलों में बनाने की सिद्धांतिक मंजूरी भी दे दी है।

मुख्यमंत्री ने अबोहर निवासियों को 119.16 करोड़ रुपये का तोहफा दिया

जागृती ब्यूरो

अबोहर शहर के निवासियों को बड़ी सौगात देते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने जल आपूर्ति और सीवरेज परियोजना जनता को समर्पित की, जिससे शहरवासियों को बड़ी सुविधा प्राप्त होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ये परियोजनाएं शहरवासियों के लिए मील का पत्थर साबित होंगी। उन्होंने कहा कि इससे शहर के बुनियादी ढांचे के विकास को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने बताया कि 119.16 करोड़ रुपये की लागत से विकसित इन परियोजनाओं का उद्देश्य शहर के 1.5 लाख से अधिक निवासियों को स्वच्छ और सतत जल आपूर्ति सुनिश्चित करना है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि 3.50 एमजीडी क्षमता वाली स्वचालित जल आपूर्ति परियोजना लोगों को नहरी जल की आपूर्ति करेगी।

मुख्यमंत्री ने अबोहर निवासियों को उच्च-गुणवत्ता वाली सेवाएं प्रदान करने के लिए अपनी सरकार की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार हर शहर के नागरिकों को बुनियादी सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि 27.06 करोड़ रुपये की लागत वाली जल आपूर्ति परियोजना अबोहर शहर की 100 प्रतिशत आबादी की जल आवश्यकताओं को पूरा करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि 92.10 करोड़ रुपये की लागत वाली सीवरेज परियोजना 100 प्रतिशत जनसंख्या को लाभान्वित करेगी। भगवंत सिंह मान ने उम्मीद जताई कि ये परियोजनाएं पूरे सीमावर्ती क्षेत्र, विशेष रूप से अबोहर में, प्रगति और खुशहाली लाने में सहायक साबित होंगी।

दिव्यांग व्यक्तियों के कल्याण को सुनिश्चित करने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई

जागृती ब्यूरो

दिव्यांग व्यक्तियों (पीडब्ल्यूडी) के कल्याण को सुनिश्चित करने की राज्य सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता दोहराते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने विभिन्न विभागों में खाली पड़ी दिव्यांग व्यक्तियों के लिए आरक्षित पदों के बैकलॉग को भरने के लिए एक विशेष भर्ती अभियान शुरू करने की घोषणा की।

अपने आधिकारिक निवास पर सामाजिक न्याय और बाल कल्याण विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने विभिन्न विभागों में दिव्यांग व्यक्तियों के खाली पदों के बैकलॉग की पहचान की है। उन्होंने बताया कि अब तक विभिन्न विभागों में बैकलॉग के रूप में सीधी भर्ती के 1754 पदों और पदोन्नति के 556 पदों की पहचान की गई है। भगवंत सिंह मान ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि इन खाली पदों को जल्द से जल्द भरने की प्रक्रिया तेज की जाए।

मुख्यमंत्री ने दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2016 के तहत नियमों में संशोधन को भी मंजूरी दी और कहा कि यह संशोधन दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों की रक्षा में सहायक होगा। उन्होंने कहा कि दिव्यांग व्यक्ति समाज के असली नायक हैं, क्योंकि वे अनेक बाधाओं के बावजूद जीवन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए ठोस प्रयास कर रही है कि ऐसे सभी लोग सम्मान और गरिमा के साथ जीवन जी सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह गर्व की बात है कि राज्य सरकार ने दिव्यांग व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए कई कदम उठाए हैं। उन्होंने बताया कि हाल ही में राज्य सरकार ने नेत्रहीनों के आश्रितों को मुफ्त बस यात्रा की सुविधा प्रदान की है और इस संबंध में जल्द ही अधिसूचना जारी की जाएगी। भगवंत सिंह मान ने बताया कि पंजाब रोडवेज और पीआरटीसी बसों के किराए में दिव्यांग व्यक्तियों को 50 प्रतिशत छूट दी गई है, और 2023-24 के दौरान 7.5 लाख यात्रियों को लाभ पहुंचाकर 2.19 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि राज्य सरकार ने 2.65 लाख दिव्यांग व्यक्तियों को राज्य पेंशन योजना के तहत कवर किया है और 2024-25 के दौरान लाभार्थियों को 278.17 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया है। उन्होंने बताया कि दिव्यांग बच्चों में शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए 12,607 लाभार्थियों को 3.37 करोड़ रुपए की राशि वजीफे के रूप में दी गई है। भगवंत सिंह मान ने आगे बताया कि राज्य सरकार ने 144 सरकारी इमारतों को दिव्यांग व्यक्तियों के अनुकूल बनाने के लिए एसआईपीडीए योजना के तहत 23.16 करोड़ रुपए की राशि जारी की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिव्यांग व्यक्तियों को सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर देने के लिए राज्य सरकार ने पिछले दो वर्षों के दौरान 105 दिव्यांग व्यक्तियों को रियायती ब्याज दरों पर 1.31 करोड़ रुपए के ऋण प्रदान किए हैं। उन्होंने बताया कि 21 दिव्यांग व्यक्तियों को विभिन्न संस्थाओं जैसे मिल्कफेड, मार्कफेड और अन्य से बूथ प्रदान किए गए हैं। भगवंत सिंह मान ने आगे कहा कि राज्य सरकार समाज के इस वर्ग के कल्याण के लिए हरसंभव प्रयास करेगी।

मोहाली सिविल अस्पताल में उन्नत रक्त घटक पृथक्करण इकाई का किया उद्घाटन

जागृती ब्यूरो

पंजाब के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण और चिकित्सा व शिक्षा अनुसंधान मंत्री डॉ. बलबीर सिंह ने सिविल अस्पताल मोहाली में उन्नत रक्त घटक पृथक्करण इकाई का उद्घाटन किया और दो रक्त संग्रह और ट्रांसपिरेशन वैन का शुभारंभ किया।

पंजाब स्टेट ब्लड ट्रांसफ्यूजन काउंसिल, मेडिकल कॉलेज के अधिकारियों व नर्सिंग एवं मेडिकल छात्रों को संबोधित करते हुए स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि राज्य द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान में तीसरा राष्ट्रीय रैंक प्राप्त करने की उपलब्धि ने राज्य के मनोबल को बढ़ाया है ताकि लोगों को रक्तदान के महत्व के बारे में जागरूक किया जा सके और इसे आगे के उपयोग के लिए सुरक्षित और सावधानीपूर्वक संभालने के लिए उचित व्यवस्था की जा सके।

उन्होंने बताया कि राज्य में पहले सरकारी क्षेत्र में 26 ब्लड कम्पोनेंट एवं सेपरेशन यूनिट हैं तथा सिविल अस्पताल मोहाली में 27वीं यूनिट शुरू की गई है। इस अपग्रेडेड यूनिट में पैक्ड रेड सेल्स, फ्रेश फ्रोजन प्लाज्मा, प्लेटलेट्स, प्लेटलेट कंसन्ट्रेट, क्रायोप्रेसिपिटेट तथा प्लेटलेट्स रिच प्लाज्मा उपलब्ध होगा, जिसे इस यूनिट द्वारा एक व्यक्ति के ही रक्त से अलग किया जाएगा। इससे पहले यहां अन्य ब्लड कम्पोनेंट की सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली पंजाब सरकार इंडियन रेड क्रॉस लुधियाना, राजपुरा, मलेरकोटला, कोटकपूरा, बटाला, फाजिल्का, खन्ना तथा आनंदपुर साहिब सहित आठ और ब्लड सेंटर को ब्लड कम्पोनेंट सेपरेशन यूनिट में अपग्रेड करने जा रही है। इसके अलावा संपूर्ण रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सुनाम, डेराबस्सी, एसबीएस नगर तथा समाना में चार नए ब्लड सेंटर स्थापित करने की योजना बनाई गई है। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह ने कहा कि वहां इलाज करवा रहे मरीजों को संपूर्ण रक्त और रक्त घटकों की सुविधा मुफ्त उपलब्ध है, जबकि निजी अस्पतालों को जरूरत पड़ने पर ये सेवाएं मामूली कीमत पर मुहैया करवाई जाएंगी।

उन्होंने कहा कि पंजाब राज्य में 182 लाइसेंस प्राप्त रक्त केंद्र

हैं, जिनमें से 49 सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं, 7 सेना और 126 निजी संस्थानों द्वारा चलाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि शुरू की गई रक्त संग्रह और परिवहन वैन आउटडोर कैंपों के लिए फायदेमंद होगी, जिनकी क्षमता एक बार में 100 यूनिट रक्त भंडारण की है और रक्त दान के लिए दो सोफे हैं।

स्वास्थ्य और परिवार मंत्री ने आगे कहा कि पंजाब के सरकारी रक्त केंद्रों ने 2023-24 के दौरान राज्य भर में एकत्रित कुल रक्त के मुकाबले 1,83,600 यूनिट रक्त का योगदान दिया है। इसके अलावा, सरकारी अस्पतालों में दाताओं द्वारा स्वैच्छिक रूप से 1,82,211 यूनिट रक्त दान किया गया, जो दान का 99 प्रतिशत है। राज्य द्वारा कुल 2062 रक्तदान शिविर आयोजित किए गए जो मानवता की सेवा में एक बड़ी उपलब्धि है।

बटाला में नई अपग्रेडेड चीनी मिल को लोगों को की समर्पित

जागृती ब्यूरो

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने राज्य की पारंपरिक राजनीतिक पार्टियों पर हमला करते हुए कहा कि इन पार्टियों ने सरहदी क्षेत्र के बहादुर लोगों की पीठ में छुरा घोंपा और अपने निजी स्वार्थों के लिए इस क्षेत्र की कई पीढ़ियों को बर्बाद कर दिया।

बटाला में नई अपग्रेडेड चीनी मिल लोगों को समर्पित करने के बाद एक रैली को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य के उन्नत और उपजाऊ सरहदी क्षेत्र को पारंपरिक राजनीतिक पार्टियों ने नज़रअंदाज किया जिसके कारण यह क्षेत्र विकास की रफ्तार में पिछड़ गया है। उन्होंने कहा कि इन पार्टियों के नेताओं ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके राज्य की युवा पीढ़ी को झूठे मामलों में फंसाकर बर्बाद किया। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य के सरहदी जिलों के निवासी बहादुर लोग हैं जिन्होंने हमेशा देश की एकता और संप्रभुता की रक्षा की है।

मुख्यमंत्री ने कहा, "यह धरती महान गुरु साहिबान द्वारा कृपा प्राप्त पवित्र धरती है और यहां बहादुर और मेहनती लोगों का निवास है, जिन्होंने लंबे समय तक पारंपरिक पार्टियों की राजनीतिक बदले की भावना का सामना किया है। महान देशभक्त पैदा करने वाले इस क्षेत्र ने पारंपरिक पार्टियों के शासनकाल में कभी विकास नहीं देखा। बहुत दुख की बात है कि इस क्षेत्र के बड़े योगदान के बावजूद इस क्षेत्र के लोगों को पारंपरिक पार्टियों ने धोखा दिया है।"

हालांकि, मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार इस क्षेत्र के विकास के लिए अथक प्रयास कर रही है जिसके चलते 296 करोड़ रुपये की लागत से इस अपग्रेडेड चीनी मिल की स्थापना की गई है। उन्होंने कहा कि मिल की 3500 टन गन्ने को पीसने की क्षमता है और इसमें 14 मेगावाट का सह-जनरेटर प्लांट है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इस मिल में रिफाइंड चीनी का उत्पादन किया जाएगा और ऐसा करने वाली यह राज्य की पहली सहकारी चीनी मिल होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मिल के मौजूदा सीजन में 35 लाख क्विंटल गन्ने की पिराई करने का लक्ष्य है और यह एक पर्यावरण अनुकूल संयंत्र है। उन्होंने कहा कि यह भारत में अपनी तरह की पहली चीनी मिल है जहां 100 प्रतिशत गैस पाइपलाइन बिछाई जाएगी और इसकी क्षमता रोजाना 14000 घन मीटर है और यह पर्यावरण में 30,000 कारों के बराबर प्रदूषण को रोक सकेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह संयंत्र रोजाना 150 टन से अधिक अपशिष्ट को संसाधित करेगा और 20 टन जैविक खाद तैयार करेगा जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बड़ा बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि यह बहुत गर्व और संतोष की बात है कि बहादुरपुर

पंजाब का पहला गांव है जहां घर-घर बायो रसोई गैस पहुंचाने के लिए पाइपलाइन बिछाई गई है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि यह मिल विश्व भर में उपलब्ध नवीनतम तकनीक से लैस है और इससे क्षेत्र के गन्ना किसानों को बहुत लाभ होगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह बहुत गर्व की बात है कि पंजाब न सिर्फ देश में बल्कि विश्व भर में गन्ने का सबसे अधिक भाव दे रहा है जिससे इसके किसानों को बड़ा लाभ हो रहा है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य सरकार की प्रतिबद्धता के अनुसार राज्य गन्ने के अधिकतम भाव में देश का नेतृत्व करता रहेगा। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने हमेशा गन्ना किसानों को सबसे अधिक भाव दिया है और यह सिलसिला भविष्य में भी जारी रहेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में सामाजिक सद्भाव के सूत्र इतने मजबूत हैं कि पंजाब की उपजाऊ भूमि पर कोई भी बीज उग सकता है लेकिन यहां नफरत का बीज किसी भी कीमत पर नहीं पनपेगा। उन्होंने कहा कि भले ही राज्य की शांति को भंग करने की बुरी कोशिशें की जा रही हैं लेकिन पंजाब महान गुरुओं, पीरों-पैगंबरों, संतों-महापुरुषों की पवित्र भूमि है, जिन्होंने हमें आपसी प्यार और सहनशीलता का मार्ग दिखाया है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि पंजाबियों ने हमेशा प्यार और सद्भावना के बंधन को मजबूत करके दमन, बेइंसाफी और जुल्म की जोरदार मुखालफत की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पानी और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों को राष्ट्रीय राजनीति का केंद्र बिंदु बनाने का श्रेय 'आप' को जाता है। उन्होंने कहा कि ये क्षेत्र उनकी सरकार की प्रमुख पांच प्राथमिकताएं हैं और इसके लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी जा रही है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि जहां दूसरी राजनीतिक पार्टियों ने हमेशा नफरत और फूट डालने के एजेंडे को आगे बढ़ाया है, वहीं 'आप' ने इन क्षेत्रों को प्राथमिकता देकर राजनीति को एक नई दिशा दी है।

गुरुबाणी की तुक 'पवन गुरु, पानी पिता, माता धरत महत' का हवाला देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि महान गुरु साहिब जी ने हवा (पवन) को गुरु से, पानी को पिता से और जमीन (धरती) को माता का दर्जा दिया है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि अब समय आ गया है जब हमें राज्य के पर्यावरण को बचाने का संकल्प लेकर राज्य की पुरातन शान को बहाल करने के लिए गुरुबाणी की शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार प्रदूषण को कम करने के लिए ऐसे प्लांट लगा रही है जिससे राज्य को साफ-सुथरा, हरा-भरा और प्रदूषण मुक्त बनाने में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए ऐसे प्रोजेक्ट स्थापित कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार स्थानीय युवाओं को नौकरियां देने को यकीनी बनाने के लिए ठोस उपाय कर रही है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि इससे युवाओं के विदेश जाने के रुझान को रोकने में मदद मिलेगी और युवाओं को राज्य की सामाजिक आर्थिक तरक्की में सक्रिय भागीदार बनाया जाएगा।

शिक्षा मंत्री हरजोत सिंह बैंस ने "शिक्षकों से संवाद" कार्यक्रम के तहत फाजिल्का के अध्यापकों से की बातचीत

जागृती ब्यूरो

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के बीच गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों से फीडबैक लेने की एक नई पहल के तहत, स्कूल और उच्च शिक्षा और जनसंपर्क मंत्री श्री हरजोत सिंह बैंस ने "शिक्षकों से संवाद" कार्यक्रम के तहत फाजिल्का जिले के शिक्षकों के साथ बातचीत की।

इस अवसर पर शिक्षा मंत्री श्री बैंस ने कहा कि इस कदम का उद्देश्य राज्य के सरकारी स्कूलों में और अधिक सुधार या बदलाव के लिए प्रिंसिपलों, हेड मास्टरों, बीपीईओ, सेंटर हेड टीचरों, विभिन्न कार्यक्रमों के नोडल अधिकारियों और स्कूल परिसर प्रबंधकों से पूछना है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व वाली राज्य सरकार ने सरकारी स्कूल के छात्रों के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए स्कूल ऑफ एमिनेंस, स्कूल ऑफ हैप्पीनेस और स्कूल ऑफ ब्रिलिएंस की अवधारणा शुरू करके वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार के प्रयास शुरू किए हैं

फाजिल्का को शिक्षकों की राजधानी बताते हुए उन्होंने कहा कि विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे की व्यवस्था के अनुसार हमारी

शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने और मजबूत करने के लिए स्कूल के प्रिंसिपलों, हेडमास्टरों और शिक्षकों को सिंगापुर, आईआईएम अहमदाबाद और अब फिनलैंड से प्रशिक्षित किया जा रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि पंजाब के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि शिक्षा और स्वास्थ्य सार्वजनिक मुद्दा बनकर उभरे हैं. उन्होंने कहा कि उन्होंने अब तक 1000 स्कूलों का दौरा किया है और ज्यादातर शिक्षकों को अपने काम के प्रति समर्पित पाया है. शिक्षकों से मिले सुझावों के अनुरूप विभाग में सुधार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बुनियादी ढांचे और अन्य उन्नयन के लिए कुल 20,000 स्कूलों का सर्वेक्षण किया गया था और उन्हें यह कहते हुए खुशी हो रही है कि लगभग 8,000 स्कूलों को 1,400 किलोमीटर की चार दीवारें मिल चुकी हैं, जबकि 10,000 कक्षाओं का निर्माण/मरम्मत और नवीनीकरण पूरा हो चुका है इसी प्रकार 90 प्रतिशत से अधिक विद्यालयों में वाई-फाई की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है।

इस अवसर पर फाजिल्का के विधायक नरिंदर पाल सिंह सवना ने कहा कि पंजाब सरकार ने उनके क्षेत्र में शिक्षा पर 72 करोड़ 81 लाख रुपये खर्च किए हैं, जबकि बल्लुआना के विधायक अमनदीप सिंह गोल्डी मुसाफिर ने कहा कि बल्लुआना हलके में स्कूलों पर 100 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं।

इस मौके पर एमिनेंस स्कूल रामसरा के प्रिंसिपल नवजोत खैहरा ने सिंगापुर से मिली ट्रेनिंग का जिक्र किया और कहा कि वहां से मिली ट्रेनिंग को स्कूलों में लागू किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि एमिनेंस स्कूल के प्रति अभिभावकों और छात्रों का उत्साह इसी बात से पता चलता है कि उनके स्कूल में 9वीं कक्षा में प्रवेश के लिए 2000 से अधिक और 11वीं कक्षा में प्रवेश के लिए 3000 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए थे। जसविंदर सिंह प्रिंसिपल सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल गिदड़ांवाली ने जेईई और एनईईटी परीक्षा के लिए प्रशिक्षण के लिए किए गए प्रयासों के लिए सरकार का धन्यवाद किया। उन्होंने बताया कि पिछले सत्र में जिले के सरकारी स्कूलों के 46 बच्चों ने जेईई मेन और 17 ने नीट की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। बाजीदपुर के प्रिंसिपल रणबीर सिंह ने स्कूल को एक करोड़ 25 लाख रूपये का अनुदान देने के लिए धन्यवाद दिया। नुकेरिया स्कूल के प्रिंसिपल हंस राज ने शैक्षिक कैलेंडर और वर्दी पर चर्चा की। सरकारी कन्या स्कूल अबोहर की प्रिंसिपल सुनीता ने कहा कि सरकारी स्कूलों में परिवहन की सुविधा मिलने से छात्राओं के लिए पढ़ाई आसान हो गई है। लाधूका स्कूल के प्रिंसिपल राजेंद्र विखोना ने कहा कि मेगा पीटीएम से अभिभावकों के साथ हमारा संवाद मजबूत हुआ है और बच्चों की शिक्षा और स्कूलों के विकास में उनकी भूमिका काफी बढ़ गई है। हस्तां कलां के प्रिंसिपल परमिंदर कुमार ने कहा कि पिछले साल बाढ़ के कारण स्कूल की इमारत क्षतिग्रस्त हो गई थी, लेकिन सरकार ने तुरंत मरम्मत के लिए अनुदान जारी किया, जिससे स्कूल फिर से अपने पुराने स्वरूप में आ गया। हिम्मतपुरा क्लस्टर प्रमुख अभिजीत ने कहा कि अब सीमावर्ती गांवों में बीएसएनएल के माध्यम से कनेक्टिविटी मिलने से स्कूलों का प्रबंधन आसान हो गया है। शिक्षक राकेश कंबोज ने फिनलैंड से प्रशिक्षण के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि शिक्षकों के चयन का तरीका काफी पारदर्शी रहा है। प्रोन्नति के बारे में बात करते हुए डिप्टी डीईओ पंकज अंगी ने बताया कि जिले में 96 शिक्षकों को व्याख्याता के पद पर प्रोन्नति दी गयी है.

गणतंत्र दिवस: 26 जनवरी

लोहड़ी का त्यौहार

जागृती ब्यूरो

लोहड़ी पंजाबी और हरियाणवी लोग बहुत उल्लास से मनाते हैं। यह देश के उत्तर प्रान्त में ज्यादा मनाया जाता हैं। इन दिनों पुरे देश में पतंगों का ताता लगा रहता हैं। पुरे देश में भिन्न–भिन्न मान्यताओं के साथ इन दिनों त्यौहार का आनंद लिया जाता हैं।

त्यौहार प्रकृति में होने वाले परिवर्तन के साथ– साथ मनाये जाते हैं। जैसे लोहड़ी में कहा जाता हैं कि इस दिन वर्ष की सबसे लम्बी अंतिम रात होती हैं इसके अगले दिन से धीरे–ध

ीरे दिन बढ़ने लगता है। साथ ही इस समय किसानों के लिए भी उल्लास का समय माना जाता है। खेतों में अनाज लहलहाने लगते है और मौसम सुहाना सा लगता है, जिसे मिल जुलकर परिवार एवम दोस्तों के साथ मनाया जाता हैं। इस तरह आपसी एकता बढ़ाना भी इस त्यौहार का उद्देश्य है।

लोहड़ी पौष माह की अंतिम रात को एवम मकर संक्राति की सुबह तक मनाया जाता है यह प्रति वर्ष मनाया जाता है। इस साल 2023 में यह त्यौहार 14 जनवरी को मानाया जायेगा। त्यौहार भारत देश की शान हैं। हर एक प्रान्त के अपने कुछ विशेष त्यौहार हैं। इन में से एक हैं लोहड़ी। लोहड़ी पंजाब प्रान्त के मुख्य त्यौहारों में से एक हैं जिन्हें पंजाबी बड़े जोरों शोरों से मनाते हैं। लोहड़ी की धूम कई दिनों पहले से ही शुरू हो जाती हैं। यह समय देश के हर हिस्से में अलग– अलग नाम से त्यौहार मनाये जाते हैं जैसे मध्य भारत में मकर संक्रांति, दक्षिण भारत में पोंगल का त्यौहार एवम काईट फेस्टिवल भी देश के कई हिस्सों में मनाया जाता हैं। मुख्यतः यह सभी त्यौहार परिवार जनों के साथ मिल जुलकर मनाये जाते हैं, जो आपसी बैर को खत्म करते हैं।

पुराणों के आधार पर इसे सती के त्याग के रूप में प्रतिवर्ष याद करके मनाया जाता हैं। कथानुसार जब प्रजापति दक्ष ने अपनी पुत्री सती के पति महादेव शिव का तिरस्कार किया था और अपने जामाता को यज्ञ में शामिल ना करने से उनकी पुत्री ने अपनी आपको को अग्नि में समर्पित कर दिया था। उसी दिन को एक पश्चाताप के रूप में प्रति वर्ष लोहड़ी पर मनाया जाता है और इसी कारण घर की विवाहित बेटी को इस दिन तोहफे दिये जाते हैं और भोजन पर आमंत्रित कर उसका मान सम्मान किया जाता हैं। इसी खुशी में श्रृंगार का सामान सभी विवाहित महिलाओ को बाँटा जाता हैं।

लोहड़ी के पीछे एक ऐतिहासिक कथा भी हैं जिसे दुल्ला भट्टी के नाम से जाना जाता हैं। यह कथा अकबर के शासनकाल

की हैं उन दिनों दुल्ला भट्टी पंजाब प्रान्त का सरदार था, इसे पंजाब का नायक कहा जाता था। उन दिनों संदलबार नामक एक जगह थी, जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है। वहाँ लड़कियों की बाजारी होती थी। तब दुल्ला भट्टी ने इस का विरोध किया और लड़कियों को सम्मानपूर्वक इस दुष्कर्म से बचाया और उनकी शादी करवाकर उन्हें सम्मानित जीवन दिया। इस विजय के दिन को लोहड़ी के गीतों में गाया जाता हैं और दुल्ला भट्टी को याद किया जाता हैं।

इन्ही पौराणिक एवम ऐतिहासिक कारणों के चलते पंजाब प्रान्त में लोहड़ी का उत्सव उल्लास के साथ मनाया जाता हैं।

लोहड़ी पंजाबियों का विशेष त्यौहार हैं जिसे वे धूमधाम से मनाते हैं। नाच, गाना और ढोल तो पंजाबियों की शान होते हैं और इसके बिना इनके त्यौहार अधूरे हैं।

लोहड़ी आने के कई दिनों पहले ही युवा एवम बच्चे लोहड़ी के गीत गाते हैं। पन्द्रह दिनों पहले यह गीत गाना शुरू कर दिया जाता हैं जिन्हें घर–घर जाकर गया जाता है। इन गीतों में वीर शहीदों को याद किया जाता हैं जिनमे दुल्ला भट्टी के नाम विशेष रूप से लिया जाता है।

लोहड़ी में रबी की फसले काट कर घरों में आती हैं और उसका जश्न मनाया जाता हैं। किसानों का जीवन इन्ही फसलो के उत्पादन पर निर्भर करता है और जब किसी मौसम के फसले घरों में आती हैं हर्षोल्लास से उत्सव मनाया जाता हैं। लोहड़ी में खासतौर पर इन दिनों गन्ने की फसल बोई जाती हैं और पुरानी फसले काटी जाती हैं। इन दिनों मूली की फसल भी आती है और खेतो में सरसों भी आती हैं। यह ठण्ड की बिदाई का त्यौहार माना जाता है।

भारत देश में हर त्यौहार के विशेष व्यंजन होते हैं। लोहड़ी में गजक, रेवड़ी, मुंगफली आदि खाई जाती हैं और इन्हीं के पकवान भी बनाये जाते हैं। इसमें विशेषरूप से सरसों का साग और मक्का की रोटी बनाई जाती हैं और खाई एवम प्यार से अपनों को खिलाई जाती है।

इस दिन बड़े प्रेम से घर से बिदा हुई बहन और बेटियों को घर बुलाया जाता हैं और उनका आदर सत्कार किया जाता हैं।पुराणिक कथा के अनुसार इसे दक्ष की गलती के प्रयाश्चित के तौर पर मनाया जाता हैं और बहन बेटियों का सत्कार कर गलती की क्षमा मांगी जाती हैं। इस दिन नव विवाहित जोड़े को भी पहली लोहड़ी की बधाई दी जाती हैं और शिशु के जन्म पर भी पहली लोहड़ी के तोहफे दिए जाते हैं।

लोहड़ी के कई दिन पहले से कई प्रकार की लकड़ियाँ इक्कट्ठी की जाती हैं।जिन्हें नगर के बीच के एक अच्छे स्थान पर जहाँ सभी एकत्र हो सके वहाँ सही तरह से जमाई जाती हैं और लोहरी की रात को सभी अपनों के साथ मिलकर इस अलाव के आस पास बैठते हैं। कई गीत गाते हैं, खेल खेलते हैं, आपसी गिले शिक्वे भूल एक दुसरे को गले लगाते हैं और लोहड़ी की बधाई देते हैं। इस लकड़ी के ढेर पर अग्नि देकर इसके चारों तरफ परिक्रमा करते हैं और अपने लिए और अपनों के लिये दुआयें मांगते हैं। विवाहित लोग अपने साथी के साथ परिक्रमा लगाती हैं। इस अलावा के चारों तरफ बैठ कर रेवड़ी, गन्ने, गजक आदि का सेवन किया जाता हैं।

किसान इन दिनों बहुत उत्साह से अपनी फसल घर लाते हैं और उत्सव मनाते हैं। लोहड़ी को पंजाब प्रान्त में किसान नव वर्ष के रूप में मनाते हैं। यह पर्व पंजाबी और हरियाणवी लोग ज्यादा मनाते हैं और यही इस दिन को नव वर्ष के रूप में भी मनाते हैं।

आज भी लोहड़ी की धूम वैसी ही होती हैं बस आज जश्न ने पार्टी का रूप ले लिया हैं। और गले मिलने के बजाय लोग मोबाइल और इन्टरनेट के जरिये एक दुसरे को बधाई देते हैं। बधाई सन्देश भी व्हाट्स एप और मेल किये जाते हैं।

लोहड़ी का त्यौहार सिख समूह का पावन त्यौहार है और इसे सर्दियों के मौसम में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

पंजाब प्रांत को छोड़कर भारत के अन्य राज्यों समेत विदेशों में भी सिख समुदाय इस त्यौहार को बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं।लोहड़ी का पर्व श्र)ालुओं के अंदर नई ऊर्जा का विकास करता है और साथ ही में खुशियों की भावना का भी संचार होता है अर्थात यह त्यौहार प्रमुख त्योहारों में से एक है। इस पावन त्यौहार के दिन देश के विभिन्न राज्यों में अवकाश का प्रावधान है और इस दिन को लोग यादगार बनाते हैं।

इस पर्व के दिन लोग मक्के की रोटी और सरसों का साग बनाकर खाते हैं और यही इस त्यौहार का पारंपरिक व्यंजन है।अलावा जलाकर चारों तरफ लोग बैठते हैं और फिर गजक, मूंगफली, रेवड़ी आदि खाकर इस त्यौहार का आनंद उठाते हैं। इस पावन पर्व का नाम लोई के नाम से पड़ा है और यह नाम महान संत कबीर दास की पत्नी जी का था यह त्यौहार नए साल की शुरुआत में और सर्दियों के अंत में मनाया जाता है।

इस त्यौहार के जरिए सिख समुदाय नए साल का स्वागत करते हैं और पंजाब में इसी कारण इसे और भी उत्साह पूर्ण तरीके से मनाया जाता है। किसान भाई बहनों के लिए यह पर्व अत्यधिक शुभ होता है और इस पर्व के बीत जाने के बाद नई फसलों का कटाई का काम शुरू किया जाता है।

लोहड़ी के त्यौहार को इस तरह पूरे उत्साह से मनाया जाता हैं। देश के लोग विदेशों में भी बसे हुए हैं जिनमे पंजाबी ज्यादातर विदेशों में रहते हैं इसलिये लोहड़ी विदेशों में भी मनाई जाती हैं। खासतौर पर कनाडा में लोहड़ी का रंग बहुत सजता हैं।

भूजल संरक्षण की राह दिखाता पंजाब

अतिशी

पंजाब में धान की फसल के लिए वर्षों से पानी के अंधाधुंध दोहन के चलते रसातल में जा पहुंचे भूजल की गंभीर समस्या से निपटने के लिए भगवंत मान सरकार ने जो पहल की है, वह उम्मीद की नई रोशनी लेकर आई है। पंजाब की नई सरकार ने हाल में धान की बोआई के लिए 1,500 रुपये प्रति हेक्टेयर प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की है। इसमें डी.एस. आर. (डायरेक्ट सीडिंग राइस) विधि यानी सीधी बोआई के तरीके को अमल, में लाया जाएगा। डी.एस.आर. विधि के तहत धान के बीजों को एक मशीन की मदद से नम मिट्टी वाले खेतों में सीधे बोया जाता है। पारंपरिक विधि में धान के पौधों को पहले नर्सरी में उगाया जाता है, फिर उन्हें पानी से भरे खेत में रोपा जाता है। उल्लेखनीय है। कि धान की पारंपरिक खेती में पानी की भारी खपत होती है।

पंजाब को गेहूं और धान के उत्पादन में भारत का अन्न भंडार कहा जाता है। एक समय पंजाब जल संसाधन से संपन्न था और कृषि के मामले में एक आत्मनिर्भर राज्य था। पंजाब हरित क्रांति का एक प्रमुख गढ़ बनी। इस क्रांति का लक्ष्य भारत को भूख से मुक्त करना था। पंजाब के किसानों ने खेती के नए तरीकों को अपनाने में बहुत लचीलापन दिखाया, लेकिन इसकी कीमत उनके पानी, उनकी मिट्टी और यहां तक कि उनकी सेहत को भी चुकानी पड़ी।

हरित क्रांति के बाद 1972 और 1985–86 के बीच भारत की कृषि विकास दर 2.3 प्रतिशत थी, जबकि पंजाब की यही दर 5.7 प्रतिशत थी। इसके बाद पंजाब में अगले दो दशकों

के दौरान गिरावट देखी गई और 2005–06 तथा 2014–15 के बीच 1.61 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। पंजाब के कृषि संकट का कारण भूजल का अत्यधिक दोहन और गलत फसल पद्धतियां अपनाया जाना है। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में पाया गया कि 1998 से 2018 तक राज्य के 22 में से 18 जिलों में हर साल भूजल स्तर में एक मीटर से अधिक की गिरावट आई। पंजाब में भूजल का स्तर इसलिए न जाता गया, क्योंकि यहां धान की खेती पारंपरिक विधि से ही की जाती रही, जिसमें पानी की अधिक खपत होती है। धान की सीधी बोआई वाली डी.एस.आर. तकनीक से 15 से 20 प्रतिशत पानी की बचत होती है। इसके अलावा भूजल स्तर में 10 प्रतिशत से अधिक का सुधार होता है। स्पष्ट है कि यह तकनीक जल स्तर में आती खतरनाक गिरावट को काफी हद तक रोक सकती है। धान की परंपरागत रोपाई विधि के तहत किसान नर्सरी में धान के बीजों से पौधों को उगाता है। बाद में इन पौधों को लगभग एक महीने बाद पानी वाले खेत में लगाता है। रोपाई के बाद पहले तीन–चार हफ्तों तक खेतों में चार–पांच सेमी पानी सुनिश्चित करने के लिए धान की फसल को लगभग दैनिक रूप से पानी देना पड़ता है। जब धान की पौध का तना विकास के चरण में होता है, तब अगले चार–पांच सप्ताह तक आम तौर पर किसान हर दो–तीन दिनों में खेत की सिंचाई करते हैं। चूंकि धान की सीधी बोआई वाली डीएसआर तकनीक में पानी से भरे खेत की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है। परिणाम स्वरूप अगली फसल में उपज में वृद्धि होती है। चूंकि डीएसआर तकनीक में पानी और बिजली की भी बचत होती है, इसलिए वह किसानों के लिए कहीं ज्यादा किफायती है। इससे धान की रोपाई में आने वाला मजदूरी का खर्च भी बचता है।

धान की खेती में डीएसआर तकनीक अपनाने से लागत 2,000–2,500 रुपये प्रति एकड़ से अधिक नहीं आती। इसमें मशीन का किराया कीटनाशक स्प्रै और खेत को फसल के लिए तैयार करना भी शामिल है। एक आंकड़े के अनुसार 2020 में इस पद्धति से धान की खेती करने वाले किसान प्रति एकड़ लगभग 4,000 से 5,000 रुपये बचाने में कामयाब रहे। इससे लगभग 500 से 600 करोड़ रुपये की बचत हुई। पंजाब सरकार का लक्ष्य अब इस बचत को तीन गुना करना है। इसके लिए मान सरकार ने 12 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को धान की सीधी बोआई यानी डी.एस.आर. तकनीक के तहत लाने का लक्ष्य रखा है। यह पिछले साल डीएसआर के तहत क्षेत्र की तुलना में लगभग दोगुना होगा। इससे दीर्घकालिक लाभ होंगे। पंजाब के 20 प्रतिशत क्षेत्र में किसान पहले से ही धान की सीधी बोआई कर रहे हैं, लेकिन यह ध्यान रहे कि पंजाब के लिए डीएसआर तकनीक की सिफारिश 2010 में की गई थी। पता नहीं किन कारणों से पिछली सरकारों ने इसकी खूबियों से अवगत होने के बावजूद गत 12 वर्षों से इस तकनीक को बढ़ावा देने और किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया? इसका परिणाम यह हुआ कि भूजल का स्तर और गिरता चला गया।

डी.एस.आर. तकनीक ने आशा की किरण के रूप में सामने लाने और पंजाब को अपने खोए हुए संसाधनों को पुनः प्राप्त करने का एक रास्त दिखाया। डीएसआर तकनीक से होने वाले लाभ को देखते हुए ही पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार ने पिछली सरकारों की ऐतिहासिक गलती को सुधारने और धान की सीधी बोआई को प्रोत्साहित करने क फैसला किया है। पंजाब के किसानों ने राज्य क भारत का अन्न का कटोरा बनाने में बहुत योगदान दिया है। अब समय आ गया है कि कारगर साबित हो चुकी डी.एस.आर. तकनीक को सभी किसानों क ओर से सहर्ष अपनाया जाए, ताकि भूजल संरक्षण के संकल्प को हासिल किया जा सके। इसके लिए उद्यम की भावना का प्रदर्शन करना होगा। इससे राज्य फिर से हंसता – खेलता पंजाब बनेगा। वास्तव में आवश्यकता तो इस बात की है कि धान की खेत के मामले में डीएसआर तकनीक को अन्यत्र भी अपनाया जाए, क्योंकि देश के कई इलाके ऐसे हैं जहां भूजल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है।

लोककवि : जवन चीज में रस आवे, उहे कविताई

जागृती ब्यूरो

विश्वमानव की अवधारणा, विश्व की विचारधाराओं और विश्वसाहित्य का परिचय पा लेना बहुत अच्छी बात है किन्तु अपने घर की साहित्य-निधियों से अपरिचित होना अच्छी बात नहीं है ।

हिन्दी की शक्ति का स्रोत रूस ,चीन और अमरीका में नहीं है, हिन्दी की शक्ति का स्रोत हमारे जनपदों और प्रदेशों के कोटि कोटि जन में है , उनकी अवहेलना करना हिन्दी की शक्ति के स्रोत की ही अवहेलना करना है , लेकिन हमारे विश्वविद्यालयों ने यही किया और इसका कारण था , अपने राजनैतिक-आश्रय को प्रसन्न कर के , अपने निजी-हितों को साधना ।

राजनैतिक-मतवाद को साहित्य की कसौटी बनाने के लिए यह सब होता , चलता रहा ।

भरत मुनि ने अपने जमाने के सभी लोकप्रचलित -नाट्यरूपों को आधार बनाया , उन पर गहन चिन्तन किया और काव्य की आत्मा "रस "जैसी गहन और व्यापक अवधारणा दी । वह अवधारणा जो शताब्दियों तक साहित्य-विमर्श का आधार बनी तथा एक के बाद एक आचार्य अपने-अपने मत को लेकर के आये । काव्यशास्त्र में उनका अध्ययन किया जा सकता है ।

लेकिन हमारे विश्वविद्यालयों के महन्त साहित्य के इन विविध लोकप्रचलित -रूपों से विमुख ही रहे और साहित्य की परिभाषा को संकीर्ण ही बनाते रहे । एक ओर ब्रजभाषा , मैथिली , राजस्थानी , अवधी आदि के लोकनिष्ठ- साहित्य को अपने पाठ्यक्रमों से धकियाते रहे तो दूसरी ओर अपने जमाने के नाट्यरूपों के साहित्य को साहित्य ही नहीं माना ।

लोक तथा लोकप्रिय का विश्लेषण पाठ्यक्रम का अंग क्यों नहीं बन सकता ? अनेक फ़िल्म ऐसी हैं , जो किसी भी क्लासिक-साहित्य से नीचे नहीं है ।

पंडवानी का मंच पाठ्यक्रम का अंग क्यों नहीं बन सकता ?कश्मीर की लल्लेश्वरी , पंजाब का वारिस शाह, बुल्लेशाह , शेख फरीद, बुंदेलखंड का ईसुरी , ब्रज का नाथूराम शर्मा शंकर, नथाराम गौड़, हरियाणा का लखमी चन्द , भोजपुरी का भिखारी ठाकुर आपकी दृष्टि में यदि कवि नहीं है, तो आपकी दृष्टि में कोई दोष है। राजनैतिक मतवाद को महत्त्व देने के लिए इधर-उधर के साहित्य को पाठ्यक्रमों का अंग बनाया गया लेकिन लोक को अध्ययन का विषय ही नहीं माना ।लोकतन्त्र के मूलाधार से इतना अपरिचय उन महन्तों का दृष्टिदोष ही था और अब हमें इसका परिहार कर लेना चाहिये ।

हिन्दी - साहित्य-इतिहास ने भले ही महाकवि शंकर को उनका उचित स्थान नहीं दिया , किन्तु जनता के जीवन की गहराई में वे आज भी जीवित हैं ।

मुझे कक्षा में बार-बार पढाया गया था कि द्विवेदी-युग के प्रतिनिधि कवि हैं - मैथिलीशरणगुप्त ।बात गलत नहीं है ,लेकिन अधूरी है ।आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने स्वयं अपने को महाकवि शंकर का ऋणी बतलाया था । आचार्य पद्मसिंहशर्मा ने लिखा था कि आधुनिक हिन्दीसाहित्य में महाकवि शंकर के काव्य का जोड नहीं है । हरिऔध ने कहा था कि वे हिन्दीसाहित्य के विशाल स्तंभ थे । गणेशशंकरविद्यार्थी ने उनके काव्य में विद्युद्वेग देखा था ।

महान उपन्यासकार प्रेमचन्द ने कहा था कि शायद कोई जमाना आवे कि महाकवि शंकर की जन्मभूमि हमारा तीर्थस्थान बन जाय। डा.धीरेन्द्रवर्मा ने लिखा कि महाकवि शंकर की कविता हिन्दीकाव्य में अनौखे स्थान की अधिकारिणी है।आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा था कि उस जमाने में जब कि लोग ब्रजभाषा में ही कविता लिखते थे , महाकवि शंकर ने खडी बोली को काव्यासन पर प्रतिष्ठित करने में जो योगदान दिया ,उसे भूला नहीं जा सकता है ।महादेवी वर्मा ने लिखा है कि महाकवि शंकर की रचनाओं की छाप बचपन से ही मेरे मन पर पडी थी । इतना महिमामय कवि हिंदी के विद्यार्थी की नजर से ओझल है।

ब्रज के गांवों में मैंने नाथूरामशंकर की कविता की गतिशीलता को देखा।शंकर की कविता मानो जनता के हाथ में अस्त्र-शस्त्र है,जीवन की हर परिस्थिति में उनकी कविता लोक जीवन के साथ खडी है।

जिन्होंने मुझे पढाया था कि मैथिली शरणजी द्विवेदीयुग के प्रतिनिधि कवि हैं,उनसे क्षमायाचना के साथ कहना चाहता हूं कि आपने अधूरा सच बताया था।

बुंदेली के ईसुरी ,अवधी के रमईकाका,वंशीधरशुक्ला, गढवाली के नेगी,एक लंबी परंपरा है।वे किसी पीठ के पुरस्कार के मोहताज नहीं हैं।सवाल यह है किआपकी रचना ने जनजीवन में उतरकर उसे जीवन का संबल और प्रयोजन दिया है?क्या वह रचना लोकचित्त पर चढ सकी है?यदि नहीं तो एक हजार आलोचक आपकी स्तुति में खडे हों,आपकी रचना कोर्स में लगी हो,वह सौ साल तक जिंदा नहीं रहेगी?

राहुलजी ने भिखारी ठाकुर के संबंध में कहा था कि -'-'हमनी के बोली में केतना जोर हवे, केतना तेज बा, ई अपने सब भिखारी ठाकुर के नाटक में देखींले। लोग के काहे नीमन लागेला भिखारी ठाकुर के नाटक? काहे दस-दस, पनरह-पनरह हजार के भीड़ होला ई नाटक देखे के खातिर ? मालूम होता कि एही नाटक में पब्लिक के रस आवेला । जवन चीज में रस आवे, उहे कविताई । केहू के लमहर नाक होखे आ ऊ खाली दोसे सूँघत फिरे त ओकरा खातिर का कहल जाय! हम ई ना कहतानी जे भिखारी ठाकुर के नाटकन में दोस नइखे। दोस बा त ओकर कारन भिखारी ठाकुर नइखन, ओकर कारन हवे पढुवा लोग। भिखारी ठाकुर हमनी के एगो अनगढ़ हीरा हवे। उनकरा में कुल्हि गुन बा।'

जनपदीयसाहित्यधारा और राजसाहित्य-धारा? एक के पास साधनों का अभाव और दूसरीधारा के पास साधनों का पहाड?एक साहित्यधारा,जो राजनीति और प्रशासन की गणेश-परिक्रमा कर रही थी ;चकाचौंध।

दूसरी साहित्यधारा जो जनपदों की आवाज थी,महानगरों को सुनायी नहीं दे रही थी।

मैथिलीशरण गुप्त को पढ़ा तो अच्छी बात है किंतु नाथूराम शंकर को नहीं पढ़ा, भिखारी ठाकुर और ईसुरी को नहीं पढ़ा, लखमी चंद को नहीं पढ़ा, यह अच्छी बात नहीं हुई।

लोकतंत्र का युग है और लोक को पाठ्यक्रम से बाहर ही बैठा दिया? लोकजीवन, लोकभाषा और लोकसाहित्य पर क्या क्या पढ़ा और क्या क्या पढ़ाया ?

उसने कहा था

जागृती ब्यूरो

बड़े-बड़े शहरों के इक्के-गाड़ी वालों की जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बू कार्ट वालों की बोली का मरहम लगावे। जबकि बड़े शहरों की चौड़ी सड़को पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्के वाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट यौन-संबंध स्थिर करते हैं, कभी उसके गुप्त गुह्य अंगो से डाक्टर को लजाने वाला परिचय दिखाते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखो भर की ग्लानि और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले तंग चक्करदार गलियों में हर एक लडढी वाले के लिए ठहर कर सब्र का समुद्र उमड़ा कर--बचो खालसाजी, हटो भाईज', ठहरना भाई, आने दो लालाजी, हटो बाछा कहते हुए सफेद फेटों , खच्चरों और बतको, गन्ने और खोमचे और भारे वालों के जंगल से राह खेते हैं । क्या मजाल है कि जी और साहब बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नही

के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरो की अंगुलियों के पोरों की चींथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार कि उनकी जीभ चलती ही नही, चलती है पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हुई। यदि कोई बुढ़िया बार-बार चिटौनी देने पर

भी लीक से नही हटती तो उनकी वचनावली के ये नमूने हैं-- हट जा जीणे जोगिए, हट जा करमाँ वालिए, हट जा, पुत्तां प्यारिए. बच जा लम्बी वालिए। समष्टि में इसका अर्थ हैं कि तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रो को प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहियो के नीचे आना चाहती है? बच जा। ऐसे बम्बू कार्ट वालों के बीच में होकर एक लड़का और एक लड़की चौक की दुकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथने से जान पडता था कि दोनो सिख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था और यह रसोई के लिए बड़ियाँ। दुकानदार एक परदेशी से गुथ रहा था, जो सेर भर गीले पापड़ो की गड्डी गिने बिना हटता न था।

-- तेरा घर कहाँ है?

-- मगरे में। ...और तेरा?

-- माँझे में, यहाँ कहाँ रहती है?

-- अतरसिंह की बैठक में, वह मेरे मामा होते हैं।

-- मैं भी मामा के आया हूँ, उनका घर गुरु बाजार में है।

इतने में दुकानदार निबटा और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनो साथ-साथ चले। कुछ दूर जाकर लड़के ने मुसकरा कर पूछा-- तेरी कुड़माई हो गई? इस पर लड़की कुछ आँखे चढ़ाकर 'धत्' कहकर दौड़ गई और लड़का मुँह देखता रह गया।

दूसरे तीसरे दिन सब्जी वाले के यहाँ, या दूध वाले के यहाँ अकस्मात् दोनो मिल जाते। महीना भर यही हाल रहा। दो-तीन बार लड़के ने फिर पूछा-- तेरे कुड़माई हो गई? और उत्तर में वही 'धत्' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसी ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लड़की लड़के की संभावना के विरुद्ध बोली-- हाँ, हो गई।

-- कब?

-- कल, देखते नही यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू। ... लड़की भाग गई लड़के ने घर की सीध ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन भर की कमाई खोई, एक कुत्ते को पत्थर मारा और गोभी वाले ठेले में दूध उंडेल दिया। सामने नहा कर आती हुई किसी वैष्णवी से टकरा कर अन्धे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।

-- होश में आओ। कयामत आयी है और लपटन साहब की वर्दी पहन कर आयी है।

-- क्या? -- लपचन साहब या तो मारे गये हैं या कैद हो गये हैं। उनकी वर्दी पहन कर कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने इसका मुँह नही देखा। मैने देखा है, और बातें की हैं। सौहरा साफ़ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू। और मुझे पीने को सिगरेट दिया है।

-- तो अब? -- अब मारे गए। धोखा है। सूबेदार कीचड़ में चक्कर काटते फिरेंगे और यहाँ खाई पर धावा होगा उधर उन पर खुले में धावा होगा। उठो, एक काम करो। पलटन में पैरो के निशान देखते-देखते दौड़ जाओ। अभी बहुत दूर न गये होंगे। सूबेदार से कहो कि एकदम लौट आवें। खंदक की बात झूठ है। चले जाओ, खंदक के पीछे से ही निकल जाओ। पत्ता तक न खुड़के। देर मत करो।'

-- हुकुम तो यह है कि यहीं...

-- ऐसी तैसी हुकुम की! मेरा हुकुम है... जमादार लहनासिंह जो इस वक्त यहाँ सबसे बड़ा अफ़सर है, उसका हुकुम है। मैं लपटन साहब की ख़बर लेता हूँ।

-- पर यहाँ तो तुम आठ ही हो।

-- आठ नही, दस लाख। एक एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ।

लौटकर खाई के मुहाने पर लहनासिंह दीवार से चिपक गया। उसने देखा कि लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले। तीनों को जगह-जगह खंदक की दीवारों में घुसेड़ दिया और तीनों में एक तार सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की गुत्थी थी, जिसे सिगड़ी के पास रखा। बाहर की तरफ जाकर एक दियासलाई जलाकर गुत्थी रखने... बिजली की तरह दोनों हाथों से उलटी बन्दूक को उठाकर लहनासिंह ने साहब की कुहनी पर तानकर दे मारा । धमाके के साथ साहब के हाथ से दियासलाई गिर पड़ी । लहनासिंह ने एक कुन्दा साहब की गर्दन पर मारा और साहब 'आँख! मीन गाट्ट' कहते हुए चित हो गये। लहनासिंह ने तीनो गोले बीनकर खंदक के बाहर फेंके और साहब को घसीटकर सिगड़ी के पास लिटाया। जेबों की तलाशी ली। तीन-चार लिफ़ाफ़े और एक डायरी निकाल कर उन्हे अपनी जेब के हवाले किया।

साहब की मूर्च्छा हटी। लहना सिह हँसकर बोला-- क्यो, लपटन साहब, मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं । यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं । यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नीलगायें होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं । यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियो पर जल चढाते हैं और लपटन साहब खोते पर चढते हैं । पर यह तो कहो, ऐसी साफ़ उर्दू कहाँ से सीख आये? हमारे लपटन साहब तो बिना 'डैम' के पाँच लफ़्ज भी नही बोला करते थे ।

लहनासिंह ने पतलून की जेबों की तलाशी नही ली थी। साहब ने मानो जाड़े से बचने के लिए दोनो हाथ जेबो में डाले। लहनासिंह कहता गया-- चालाक तो बड़े हो, पर माँझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आँखे चाहिएँ। तीन महीने हुए एक तुर्की मौलवी मेरे गाँव में आया था। औरतो को बच्चे होने का ताबीज बाँटता था और बच्चो को दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछाकर हुक्का पीता रहता

था और कहता था कि जर्मनी वाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़-पढ़ कर उसमे से विमान चलाने की विद्या जान गये हैं। गौ को नही मारते। हिन्दुस्तान में आ जायेंगे तो गोहत्या बन्द कर देगे। मंडी के बनियो को बहकाता था कि डाकखाने से रुपये निकाल लो, सरकार का राज्य जाने वाला है। डाक बाबू पोल्हू राम भी डर गया था। मैने मुल्ला की दाढी मूंड़ दी थी और गाँव से बाहर निकालकर कहा था कि जो मेरे गाँव में अब पैर रखा तो -- साहब की जेब में से पिस्तौल चला और लहना की जाँघ में गोली लगी। इधर लहना की हेनरी मार्टिन के दो फ़ायरो ने साहब की कपाल-क्रिया कर दी।

धडाका सुनकर सब दौड़ आये।

बोधा चिल्लाया-- क्या है?

लहनासिंह में उसे तो यह कह कर सुला दिया कि 'एक हडका कुत्ता आया था, मार दिया' और औरो से सब हाल कह दिया। बंदूके लेकर सब तैयार हो गये । लहना ने साफ़ा फाड़ कर घाव के दोनो तरफ पट्टियाँ कसकर बांधी । घाव माँस में ही था। पट्टियो के कसने से लूह बन्द हो गया।

इतने में सत्तर जर्मन चिल्लाकर खाई में घुस पड़े। सिखो की बंदूको की बाढ ने पहले धावे को रोका। दूसरे को रोका। पर यहाँ थे आठ (लहना सिंह तक-तक कर मार रहा था। वह खड़ा था औऱ लेटे हुए थे) और वे सत्तर । अपने मुर्दा भाईयों के शरीर पर चढ़कर जर्मन आगे घुसे आते थे । थोड़े मिनटो में वे... अचानक आवाज आयी -- 'वाह गुरुजी की फतह ! वाहगुरु दी का खालसा!' और धड़ाधड़ बंदूको के फायर जर्मनो की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्कों के पाटों के बीच में आ गए। पीछे से सूबेदार हजारासिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने से लहनासिंह के साथियों केसंगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछे वालो ने भी संगीन पिरोना शुरु कर दिया ।

एक किलकारी और-- 'अकाल सिक्खाँ दी फौज आयी। वाह गुरु जी दी फतह! वाह गुरु जी दी खालसा! सत्त सिरी अकाल पुरुष!' और लड़ाई ख़तम हो गई। तिरसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खो में पन्द्रह के प्राण गए। सूबेदार के दाहिने कन्धे में से गोली आर पार निकल गयी। लहनासिंह की पसली में एक गोली लगी। उसने घाव को खंदक की गीली मिट्टी से पूर लिया। और बाकी का साफ़ा कसकर कमर बन्द की तरह लपेट लिया। किसी को ख़बर नही हुई कि लहना के दूसरा घाव -- भारी घाव -- लगा है। लड़ाई के समय चांद निकल आया था। ऐसा चांद जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियो का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है। और हवा ऐसी चल रही थी जैसी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणो पदेशाचार्य' कहलाती। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन-मनभर फ्रांस की भूमि मेरे बूटो से चिपक रही थी जब मैं दौडा दौडा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार लहनासिह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरन्त बुद्धि को सराह रहे थे और कर रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते। इस लड़ाई की आवाज़ तीन मील दाहिनी ओर की खाई वालों ने सुन ली थी। उन्होने पीछे टेलिफ़ोन कर दिया था। वहाँ से झटपट दो डाक्टर और दो बीमार ढोने की गाड़ियाँ चली, जो कोई डेढ घंटे के अन्दर अन्दर आ पहुँची। फील्ड अस्पताल नज़दीक था। सुबह होते-होते वहाँ पहुँच जाएंगे, इसलिए मामूली पट्टी बांधकर एक गाड़ी में घायल लिटाये

इतने में सत्तर जर्मन चिल्लाकर खाई में घुस पड़े। सिखो की बंदूको की बाढ ने पहले धावे को रोका। दूसरे को रोका। पर यहाँ थे आठ (लहना सिंह तक-तक कर मार रहा था। वह खड़ा था औऱ लेटे हुए थे) और वे सत्तर । अपने मुर्दा भाईयों के शरीर पर चढ़कर जर्मन आगे घुसे आते थे । थोड़े मिनटो में वे... अचानक आवाज आयी -- 'वाह गुरुजी की फतह ! वाहगुरु दी का खालसा!' और धड़ाधड़ बंदूको के फायर जर्मनो की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्कों के पाटों के बीच में आ गए। पीछे से सूबेदार हजारासिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने से लहनासिंह के साथियों के संगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछे वालो ने भी संगीन पिरोना शुरु कर दिया ।

गए और दूसरी में लाशें रखी गईं। सूबेदार ने लहनासिह की जाँघ में पट्टी बंधवानी चाही। बोधसिंह ज्वर से बर्रा रहा था। पर उसने यह कह कर टाल दिया कि थोड़ा घाव है, सवेरे देखा जायेगा। वह गाड़ी में लिटाया गया। लहना को छोडकर सूबेदार जाते नही थे। यह देख लहना ने कहा-- तुम्हे बोधा की कसम हैं और सूबेदारनी जी की सौगन्द है तो इस गाड़ी में न चले जाओ।

-- और तुम?

-- मेरे लिए वहाँ पहुँचकर गाड़ी भेज देना। और जर्मन मुर्दो के लिए भी तो गाड़ियाँ आती होगीं। मेरा हाल बुरा नही हैं। देखते नही मैं खड़ा हूँ? वजीरासिंह मेरे पास है ही।

-- अच्छा, पर...

-- बोधा गाड़ी पर लेट गया। भला, आप भी चढ़ आओ। सुनिए तो, सूबेदारनी होराँ को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना।

-- और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझ से जो उन्होने कहा था, वह मैंने कर दिया।

गाड़ियाँ चल पड़ी थीं। सूबेदार ने चढ़ते-चढ़ते लहना का हाथ पकड़कर कहा-- तूने मेरे और बोधा के प्राण बचाये हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी से तू ही कह देना। उसने क्या कहा था?

-- अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैने जो कहा, वह लिख देना और कह भी देना।

गाड़ी के जाते ही लहना लेट गया। --वजीरा, पानी पिला दे और मेरा कमरबन्द खोल दे। तर हो रहा है।

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ़ हो जाती है। जन्मभर की घटनाएँ एक-एक करके सामने आती हैं। सारे दृश्यो के रंग साफ़ होते है, समय की धुन्ध बिल्कुल उन पर से हट जाती है। लहनासिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहाँ आया हुआ है। दहीवाले के यहाँ, सब्जीवाले के यहाँ, हर कहीं उसे आठ साल की लड़की मिल जाती है। जब वह पूछता है कि तेरी कुड़माई हो गई? तब वह 'धत्' कहकर भाग जाती है। एक दिन उसने वैसे ही पूछा तो उसने कहा--हाँ, कल हो गयी, देखते नही, यह रेशम के फूलों वाला सालू? यह सुनते ही लहनासिंह को दुःख हुआ। क्रोध हुआ । क्यों हुआ?

-- वजीरासिंह पानी पिला दे।

पच्चीस वर्ष बीत गये। अब लहनासिंह नं. 77 राइफ़ल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा, न मालूम वह कभी मिली थी या नही। सात दिन की छुट्टी लेकर ज़मीन के मुकदमे की पैरवी करने वह घर गया। वहाँ रेजीमेंट के अफ़सर की चिट्ठी मिली। फौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हजारासिंह की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधासिंह भी लाम पर जाते हैं, लौटते हुए हमारे घर होते आना। साथ चलेंगे।

सूबेदार का घर रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था। लहनासिंह सूबेदार के यहाँ पहुँचा। जब चलने लगे तब सूबेदार बेड़े में निकल कर आया। बोला-- लहनासिंह, सूबेदारनी तुमको जानती है। बुलाती है। जा मिल आ।

लहनासिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती है? कब से? रेजीमेंट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। दरवाज़े पर जाकर 'मत्था टेकना' कहा। असीस सुनी। लहनासिंह चुप।

-- मुझे पहचाना?

-- नहीं।

-- 'तेरी कुड़माई हो गयी? ... धत्... कल हो गयी... देखते नही, रेशमी बूटों वाला सालू... अमृतसर में...

भावों की टकराहट से मूर्च्छा खुली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।

-- वजीरासिंह, पानी पिला -- उसने कहा था ।

स्वप्न चल रहा हैं । सूबेदारनी कह रही है-- मैने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में ज़मीन दी है, आज नमकहलाली का मौक़ा आया है। पर सरकार ने हम तीमियो की एक घघरिया पलटन क्यो न बना दी जो मै भी सूबेदारजी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भरती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नही जिया । सूबेदारनी रोने लगी-- अब दोनों जाते हैं । मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन टाँगे वाले का घोड़ा दहीवाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़ो की लातो पर चले गये थे। और मुझे उठाकर दुकान के तख्त के पास खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।

रोती-रोती सूबेदारनी ओबरी में चली गयी। लहनासिंह भी आँसू पोछता हुआ बाहर आया।

-- वजीरासिंह, पानी पिला -- उसने कहा था।

लहना का सिर अपनी गोद में रखे वजीरासिंह बैठा है। जब मांगता है, तब पानी पिला देता है। आध घंटे तक लहना फिर चुप रहा, फिर बोला-- कौन? कीरतसिंह?

वजीरा ने कुछ समझकर कहा-- हाँ।

-- भइया, मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पट्ट पर मेरा सिर रख ले।

वजीरा ने वैसा ही किया ।

-- हाँ, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस। अब के हाड़ में यह आम खूब फलेगा। चाचा-भतीजा दोनों यहीं बैठकर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है उतना ही बड़ा यह आम, जिस महीने उसका जन्म हुआ था उसी महीने मैने इसे लगाया था।

वजीरासिंह के आँसू टप-टप टपक रहे थे। कुछ दिन पीछे लोगों ने अख़बारो में पढ़ा---

फ्रांस और बेलजियम-- 67वीं सूची-- मैदान में घावों से मरा -- न. 77 सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह ।

गुडिया

अगर आप प्यार को समझते हैं तो प्यार एक ऐसी सार्वभौमिक मुद्रा है जो दुनिया के हर कोने में चलती है, चाहे देश हो, चाहे विदेश हो, चाहे कोई व्यक्ति हो, मिठास से भरे दो शब्द दूसरों पर अपना जादुई असर दिखाते हैं . रिश्तों को फूलों की तरह महकना और महसूस करना चाहिए, न कि कांटों की तरह, जो हर पल चिंता का कारण बनते हैं। अशिष्टता कभी फलदायी नहीं होती, अशिष्ट स्वभाव का स्वामी अक्सर दूसरे के मन से उसी प्रकार गिर जाता है जैसे पेड़ से सूखा पत्ता गिर जाता है। एक आरामदायक रिश्ते के लिए प्राकृतिक सौम्यता हमेशा आवश्यक होती है। क्या गया का गधा चक्र जारी रहेगा?

दुनिया में कोई भी चीज़ हानि/लाभ के बिना नहीं है, लाभदायक और हानिकारक आपस में जुड़े हुए हैं, 50% से अधिक को अपनाना और 50% से कम को त्यागना अधिकतर अच्छा है। पूरे पचास फीसदी फैसले लोगों को शशोपंज में बांधे रखते हैं. इस प्रकार के स्वभाव वाली एक महिला, जिसका पारिवारिक नाम बचपन से ही गुड़ी था, पंजाबी समाज में ज्यादातर लड़कों को गुड़ा और लड़कियों को गुड़ी कहा जाता था, जैसे बचपन में बच्चों को गुड़े गुड़ी कहा जाता था। वे कई लड़कियों के साथ खेलते हैं, इस वजह से उनका नाम पक जाता है और वे जीवन भर गुड़ी कहलाती हैं। चार भाई और चार बहनें थे जो गुड़िया के बारे में बात कर रहे थे। वह बहनों में तीसरे नंबर पर थी। भाइयों में दूसरे नंबर के भाई की बीमारी के कारण शादी नहीं हुई थी। स्वास्थ्य ठीक न होने के बावजूद उन्होंने एक अकादमी खोली। जिससे उन्हें पर्याप्त पैसा मिल जाता था, बच्चे दिन भर रोते रहते थे, लेकिन उनके सिर में बहत दर्द रहता था, जिसे बाद में उन्होंने बंद कर दिया और एक दुकान खोल ली ताकि वह आराम से बैठ सकें और व्यवसाय कर सकें। सामान बेचने के लिए व्यापारी के पास जाना जरूरी नहीं था और खरीदने वाले ग्राहकों को दुकान पर जाना पड़ता था, बाकी नौकर-चाकर होते थे और पैसों के मामले में आपको बैठना पड़ता था।

गुडी भी दूसरे शहर से नर्सिंग का कोर्स करके घर आई। परिवार ने सोचा कि अब उसे नौकरी कहां मिलेगी और उन्होंने उसकी शादी की बात भी की। उसकी उम्र विवाह योग्य हो चुकी थी और विवाह के प्रति गुडी का रवैया बहुत सकारात्मक नहीं था। कौन सा ढूंढना आसान है? ऐसी कई जगहें हैं जहां रिश्तों को लेकर बातें चलती रहती हैं। एक अच्छे रिश्ते की तलाश में कई लोगों को ऐसा कहना पड़ता है। लेकिन समय के साथ लड़की की शादी न करने की जिद मजबूत होती जा रही थी. परिवार के दबाव में उसने अपने ही शहर में एक जगह सगाई कर ली. माता-पिता ने सोचा कि हमारे जाने के बाद उसे कौन देखेगा। सभी भाई-बहनों की शादी बड़े होने पर कर दी

जाएगी। देखेंगे इससे पहले कि हम अपनी आँखें बंद कर लें, चलो इसकी शादी कर लेते हैं। दोनों पक्षों को शादी की तैयारी में काफी वक्त लग गया, लेकिन शादी की तारीख अभी तय नहीं हुई थी. दो महीने बीते थे कि लड़की फिर जिद पर अड़ गई कि वह शादी नहीं करेगी। वजह के बारे में किसी को कुछ नहीं पता था. लड़की और उसका भगवान जाने, उसने रोटी और पानी छोड़ दिया। दबाने पर वह रोने लगती, जिसके आगे पूरा परिवार बेहाल हो जाता। आख़िरकार गुड़िया की जिद के आगे पूरा परिवार हार गया. सगाई टूट गई, बेकार सामान सगाई में लौटा दिया गया और गुड़िया की शादी हमेशा के लिए टूट गई। कुछ समय बीता, सबसे छोटी बहन का रिश्ता आया। वह गुडी के पिता के मित्र का लड़का था। वह भी शादीशुदा था. उनके एक भाई सेना में वरिष्ठ अधिकारी थे। उन्होंने भी शादी कर ली और जहां भी उनकी नौकरी होती, अपनी पत्नी को अपने साथ ले जाना स्वाभाविक बात थी। बड़े भाई ने इसे उचित समझा और अपना हिस्सा लेकर नई बसी कॉलोनी में रहने लगा। बंटवारे में दोनों पार्टियों ने खुद को ठगा हुआ महसूस किया. कुछ वर्ष बाद बीमार भाई की भी बीमारी के कारण मृत्यु हो गई और बीमार भाई की मृत्यु के दो वर्ष बाद छोटे भाई की शादी हो गई।

अब घर में बूढ़े माता-पिता, एक गुड़िया और एक छोटे भाई का परिवार रह गया। ननद-भाभियों का एक-दूसरे के प्रति प्रेम निम्न स्तर पर रहता था, जिसके कारण घर का वातावरण अधिक सहज नहीं रहता था। सबसे छोटी बहन और जीजाजी छोटे से ज्यादा परिपक्व थे. सभी परिवारों ने वहाँ होने का पूरा लाभ उठाया, विशेषकर दो बड़ी बहनों में से बड़ी बहन की अपनी दो बेटियाँ थीं, वे भी उसे तीसरी बेटी मानते थे। दूसरी बहन कई वर्षों तक विदेश में रही, भारत खूब आती-जाती थी, छोटी बेटी-दामाद ने हमेशा अंग्रेजों द्वारा निर्धारित नीति अपनाई, हिसाब-किताब बांटो और राज करो, वह खुद को पुराने घर की रानी मानती थी और छोटे दामाद के बारे में सास कहती थी ये बात तो मेरी राय सही है. मुफ़्त में खेलें और सबके पसंदीदा बनें, भगवान जानता है कि किसी के साथ उनका आंतरिक प्रेम क्या है।

यदि रोटी अलग-अलग पकाई जाए यानी अलग रसोई बनाई जाए तो समस्या काफी हद तक हल हो जाती है। घर में रहने वाली सबसे छोटी बहू खुश थी क्योंकि उसे बुजुर्ग दादी की सेवा से हमेशा के लिए छुटकारा मिल गया था। सभी भाई-बहनों की अपने माता-पिता के प्रति जिम्मेदारी अंत तक नाममात्र की ही रही, उनका काम केवल गुड़िया की सवारी करना था। सबसे बड़े भाई के अलग होने के समय सोहरे परिवार की थोड़ी सी आर्थिक मदद छोटे दामाद ने जीवन भर उड़ा दी। माता-पिता की मृत्यु के बाद छोटे भाई-भाभी से रिश्ता आसान नहीं था। गुड़िया को पुश्तैनी घर छोड़ना पड़ा. जो मकान उसका था, वह दूसरे स्थान पर चला गया। मैंने इसे अपना पुश्तैनी घर बना लिया. यह एक व्यावसायिक स्थान था. वहाँ छह दुकानें थीं। पांच दुकानें किराये पर थीं. मृतक भाई की दुकान की देखभाल एक छोटा लड़का करता था और वह कई वर्षों से उसे चला रहा था। अब सभी भाई-बहनों के लिए यह गुड़िया का घर है। पेका का घर बना हुआ था, सब लोग वहाँ इकट्ठे होते थे, आकर हँसते थे, गुड़िया से खेलते थे, किराया और कुछ ब्याज मिलता था, जिससे उसकी रोटी-पानी चलती थी। कौन सा फ्लैट लिया गया और कहां तोड़ा गया, इसकी जानकारी किसी को नहीं थी. नए खरीदे गए घर में सबसे ज्यादा आवाजाही छोटी बहन और जीजाजी के परिवार की थी, वे खुद को गुड़िया का असली वारिस मानते थे, परिवार के बाकी सदस्य निर्वस्त्र होकर घर छोड़कर चले गए थे। क्योंकि उन्होंने पहले ही अपने बेटे को वहां फंसा लिया था.

समय बीतता गया और अब गुड़िया एक बूढ़ी औरत में बदल गई थी। उसकी छोटी बहन का लड़का उसके साथ रहने लगा और उसी शहर में कंप्यूटर रिपेयरिंग का काम करने लगा। क्योंकि अब वह इसे अपना स्थाई घर मानने लगे थे. जहाँ तक हो सके उसके माता-पिता और बड़े जीजाजी भी आते-जाते रहते थे। वे माँ गंगा के नाम पर रेगिस्तान में कहीं रहते थे, लेकिन रात में अपने घर से यात्रा करना उनके लिए बहुत कठिन था। डर आ जाना जब माने की शादी की बात चली तो उन्होंने गुड़ी को लड़कियों के सामने मां के तौर पर पेश किया और कहा कि गुड़ी ने इस लड़के को गोद ले लिया है. गुडी को बुढ़ापे में एक सहारे की जरूरत थी. दामाद बनने के बाद लड़का-लड़की गुड़िया के साथ रहने लगे।

एक साल बाद उनके घर में एक बच्चे का जन्म हुआ, जिंदगी अपनी गति से चलने लगी। गुड़ी के बाकी भाई-बहन भी अपने-अपने कुनबे में उलझे हुए हैं। उसे इसके बारे में कुछ नहीं पता था, फिर पता चला कि गुड़िया को कैंसर हो गया है और उसका इलाज चल रहा है. माने का लड़का भी चार-पाँच साल का हो गया और स्कूल जाता था। घर से धुआं उठता है, लेकिन अंदर आग किसी को नहीं दिखती, जब तक आग चार दीवारों से ऊपर नहीं उठ जाती, तब खून के रिश्तों को खबर मिलती है। लेकिन हालात के आगे सब बेबस हो जाते हैं कि पहल कौन करे, युवक किसकी सुनता है, छोटी बहन का परिवार ही जीवन भर परिवार रहा, जब सेवा की बारी आई तो अब यह करना मुश्किल हो गया .

जब कैंसर का इलाज हुआ तो बाल झड़ गए. राणा का कहना है कि मेरा बच्चा गुड़िया को इस हालत में देखकर डर गया है। महावरा, जो आग लेने के लिए आया था और घर के स्तंभ के रूप में बैठा था, इस मेज पर 100 प्रतिशत पूर्ण है। ऐसे चरित्र के मालिक वृद्धाश्रम के लिए अपराधी हैं। परिवार के अन्य सदस्यों

से कोई समाधान नहीं निकला और गुड़ी अपने वृद्धाश्रम पहुंच गई। सुनने में आया था कि इस आश्रम का खर्च फौजी भाई और मन मिलकर उठाते हैं. दूध और पानी की तरह घुले बहनों के रिश्ते में लड़के ने लगाई कांजी, सामाजिक शर्म पता नहीं कहां गायब हो गई। सभी घनिष्ठ सम्बन्धियों को उनके माता-पिता के संरक्षण में रखा गया और केवल घर आदि का ही निर्वाह किया गया। कोई आगे नहीं आता. रिश्तों के भी तराजू होते हैं मन में. हर किसी को याद है कि पहले क्या हुआ और क्या देखा। दोनों बहनें कैसे घी की तरह घुलमिल गई थीं. दोनों एक दूसरे के साथ संबंध बनाते थे. अब किसी को परवाह नहीं. उसके घर में मदद के लिए कोई नहीं निकला, जो दोनों के बीच जाने की हिम्मत करता.

गुड़िया कैसे मदद करेगी? गुड़िया वृद्धाश्रम में बैठी है. आखिरी सांस तक जीवन का अंत प्रकृति के हाथ में है। जिस लड़के की शादी गुडी से होने वाली थी उसने इनकार की स्थिति में यह निर्णय लिया। मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? अगर मुझे शादी नहीं करनी थी तो सगाई क्यों की? मुझे अस्वीकार कर दिया गया और मेरा मजाक उड़ाया गया। क्या मेरी गलती थी? मैंने भी शादी नहीं की. यह संयोग ही था कि ऐसी जन्मभूमि पर आकर उनकी वृद्धावस्था की सांसारिक यात्रा पूरी हुई। दोनों एक ही शहर के रहने वाले थे. अत: घरेलू निर्णय सोच-समझकर लेने चाहिए न कि आध्यात्मिक प्रवाह का अनुसरण करते हुए गलत हो सकते हैं, जिससे असफलताएं बढ़ने की संभावना रहती है। किसी को भी अपने जीवन में ठहराव न आने दें। तभी आप एक सफल जीवन का आनंद उठा पाएंगे।

माने जैसे रानी-राणे और ऐसे ही विचारों और चरित्रों के मालिक नए वृद्धाश्रमों के निर्माण के लिए जिम्मेदार हैं। ऐसे लोग तन और मन की बाजी नहीं लगाते, लेकिन इन्हें पैसे के अलावा कुछ नहीं चाहिए, इन्हें सामाजिक शर्म महसूस नहीं होती, लेकिन ये बुजुर्गों के बारे में बात करने लगते हैं, कहते हैं कि हम उनकी सेवा नहीं करना चाहते, मुश्किल वक्त में मुंह मोड़ लेते हैं . वे अच्छी तरह जानते थे कि जो प्राणी इस संसार से जा रहा है वह किसी भी अवसर पर वापस आएगा। वृद्धाश्रमों के लिए जिम्मेदार कौन है... इसका उत्तर है असंयम, कर्तव्य की उपेक्षा, सम्मान और प्यार की कमी और कुछ अन्य व्यक्तिगत कारण। आज के समाज को इस पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है। जिससे जनसंख्या के साथ-साथ वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि को रोका जा सके।

हरिंदर पाल सिंह
मोबाइल 9780644040

शोध

दुनिया में हर आठवां व्यक्ति मोटापे का शिकार

जागृती ब्यूरो

एक नए अध्ययन के अनुसार दुनियाभर में हर आठवां व्यक्ति यानी करीब एक अरब लोग मोटापे से ग्रस्त हैं। मोटापा कई बीमारियों जैसे हृदय रोग, मधुमेह और कैंसर का कारण बन सकता है। यह अध्ययन चिकित्सा जर्नल लैंसेट में प्रकाशित हुआ है।

अध्ययन में पाया गया कि पिछले तीन दशकों में वयस्कों में मोटापा दोगुना से अधिक हो गया है। वहीं, 5 से 19 साल के बच्चों और किशोरों में यह समस्या चार गुना बढ़ गई है। अध्ययन में यह भी सामने आया कि 2022-23 में 43 फीसद वयस्क अधिक वजन वाले थे।

अध्ययन के अनुसार, 2022 में 15 करोड़ 90 लाख बच्चे एवं किशोर और 87 करोड़ 90 लाख वयस्क मोटापे की समस्या से जूझ रहे हैं। अध्ययन के अनुसार 1990 से 2022 तक विश्व में सामान्य से कम वजन वाले बच्चों और किशोरों की संख्या में कमी आई है। दुनियाभर में समान अवधि में सामान्य से कम वजन से जूझ रहे वयस्कों का अनुपात आधे से भी कम हो गया है। यह ताजा अध्ययन पिछले 33 साल में कुपोषण के दोनों रूपों संबंधी वैश्विक रुझानों की विस्तृत तस्वीर पेश करता है। ब्रिटेन के इंपीरियल कालेज लंदन के प्रोफेसर माजिद इज्जती ने कहा, यह बहुत चिंताजनक है कि मोटापे की महामारी जो 1990 में दुनिया के अधिकतर हिस्सों में वयस्कों में साफ नजर आती थी, अब स्कूल जाने वाले बच्चों और किशोरों में भी दिखाई देती है। इज्जती ने कहा, इसके अलावा, खासकर दुनिया के कुछ सबसे गरीब हिस्सों में करोड़ों लोग अब भी कुपोषण से पीड़ित हैं। शोधकताओं ने इस अध्ययन के लिए 190 से अधिक देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले पांच वर्ष या उससे अधिक उम्र के 22 करोड़ से अधिक लोगों के बजन और लंबाई का विश्लेषण किया। इस अध्ययन में 1,500 से अधिक शोधकताओं ने योगदान दिया। उन्होंने यह समझने के लिए शरीर द्रव्यमान सूचकांक (बीएमआइ) का विश्लेषण किया कि 1990 से 2023 के बीच दुनिया भर में मोटापे और सामान्य से कम वजन की समस्या में क्या बदलाव आया है। अध्ययन में पाया गया कि 1990 से 2023 के बीच वैश्विक स्तर पर मोटापे की दर लड़कियों और लड़कों में चार गुना से अधिक हो गई है और यह चलन लगभग सभी देशों में देखा गया है। शोधकत्ताओं ने बताया कि सामान्य से कम वजन वाली लड़कियों का अनुपात 1990 में 10.3 फीसद से गिरकर 2023 में 8.2

फीसद हो गया और लड़कों का अनुपात गया है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती है, खासकर दक्षिण- 16.7 फीसद से गिरकर 10.8 फीसद हो कुपोषण की दर भी कई जगहों पर एक पूर्व एशिया और उप-सहारा अफ्रीका में।

स्वाधीनता संग्राम के जनक
मंगल पांडे

मंगल पांडे को प्रथम स्वाधीनता संग्राम का जनक भी कहा जाता है। इनके द्वारा लगाई गई विरोध की चिंगारी ने देखते ही देखते एक भयंकर रूप ले लिया और ब्रिटिश सरकार के तख़्तो ताज को हिला कर रख दिया।

हालाँकि भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम पूरी तरह सफल नहीं हो पाया था लेकिन भारत की जनता में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना भड़क उठी थी। भारत के स्वाधीनता संग्राम में मंगल पांडे जी की महत्वपूर्ण भूमिका होने के कारण भारत सरकार द्वारा उनके सम्मान में सन् 1984 में एक डाक टिकट जारी किया गया।

मंगल पांडे का जन्म 19 जुलाई सन् 1827 को बलिया जिले के नगवा गांव में हुआ था। हालांकि कुछ इतिहासकार इनका जन्म स्थान फैजाबादद्धअयोध्याऋ जिले के सुरहूरपुर गांव मानते हैं। उनके पिताजी का नाम दिवाकर पांडे था।

मंगल पांडे एक गरीब परिवार के थे उनकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। उन दिनों अंग्रेज केवल ब्राह्मण और मुसलमानों को ही सेना में भर्ती किया करते थे। मंगल पांडे सन् 1849 में 22 साल की उम्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हो गए।

कहा जाता है कि किसी ब्रिगेडियर द्वारा उन्हें 34वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री में एक सिपाही के रूप में शामिल किया गया था। सन् 1850 बैरकपुर ने तैनात किया गया। उसी समय भारत में अंग्रेजों ने अपनी सेना के लिए एक नई राइफल का निर्माण किया था, जिसके संदर्भ में यह अफवाह फैली थी कि इस राइफल को अधिक चिकना बनाने के लिए सूअर और गाय के चर्बी का प्रयोग किया गया है। जिससे हिंदुओं और मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट हो रहा था और मंगल पांडे इसका बहुत विरोध कर रहे थे।

सन् 1857 की क्रांति के दौरान यह विद्रोह जंगल में आग की तरह संपूर्ण उत्तर भारत और देश के दूसरे भागों में फैल गया। यह भले ही भारत की स्वाधीनता का प्रथम संग्राम ना रहा हो परन्तु क्रांति निरंतर आगे बढ़ती गई। अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें गद्दार और विद्रोही की संज्ञा दे दी।

मंगल पांडे प्रत्येक भारतीय के लिए एक महान नायक हैं। जब ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में बंगाल नेटिव इन्फेंट्री में राइफल में नई कारतूसों का इस्तेमाल शुरू हुआ तो मामला और बिगड़ गया क्योंकि इन कारतूसो को बंदूक में डालने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था। देश में फैली अफवाह सैनिकों के मन में घर कर गई कि अंग्रेज हिंदुस्तान का धर्म भ्रष्ट करने पर तुला है क्योंकि यह हिंदू और मुस्लिम दोनों के लिए नापाक था।

सैनिकों को अपने साथ होने वाले भेदभाव को लेकर पहले से ही असंतोष था और नए कारतूसों से संबंधित अफवाहों ने आग में घी डालने का काम कर किया। 9 फरवरी सन् 1857 को जब नया कारतूस पैदल सेनाओं को बाँटा गया तो मंगल पांडे ने उसे लेने से इनकार कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप उनके हथियार छीन ले गए और वर्दी उतारने का हुक्म दिया गया। मंगल पांडे ने उनके आदेश मानने से भी इनकार कर दिया।

29 मार्च सन् 1857 उनकी वर्दी छीनने के लिए आगे बढ़े अँग्रेज अफसर लेफ्टिनेंट बाग पर इन्होंने आक्रमण कर दिया और उन्हें घायल कर दिया। इस प्रकार संदिग्ध कारतूस का प्रयोग ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के लिए घातक सि) हुआ। मंगल पांडे ने बैरकपुर छावनी में 29 मार्च सन् 1857 को अंग्रेज के विरु) बिगुल बजा दिया।

मंगल पांडे ने अपने अन्य साथियों के खुलेआम समर्थन का आवाहन किया परंतु डर के कारण किसी ने भी उनका साथ नहीं दिया। जनरल जान हेएरसेये ने जमींदार ईश्वरी प्रसाद को मंगल पांडे को गिरफ्तार करने का आदेश दिया, पर जमींदार ने मना कर दिया। सिवाए एक सिपाही शेख पलटु को छोड़ कर सारी रेजीमेण्ट ने मंगल पांडे को गिरफ्तार करने से मना कर दिया। कुछ समय बाद अंग्रेजी सिपाहियों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

उन्हें 6 अप्रैल सन् 1857 को फांसी की सजा सुना दी गई। फैसले के अनुसार 18 अप्रैल सन् 1857 को फांसी दी जानी थी परंतु ब्रिटिश सरकार ने मंगल पांडे को निर्धारित तिथि के 10 दिन पूर्व 8 अप्रैल सन् 1857 को ही फांसी पर लटका दिया। मंगल पांडे की शहादत की खबर पूरे देश में फैल गई और उनके द्वारा भड़कायी गई ज्वाला से अंग्रेज शासन पूरी तरह हिल गया, हालांकि अंग्रेजों ने इस क्रांति को दबा लिया।

एक महीने बाद 10 मई सन् 1857 को मेरठ के छावनी में बगावत हो गई जिससे अंग्रेजों को अस्पष्ट संदेश मिल गया था कि अब भारत में राज्य करना आसान नहीं है। इसके बाद ही हिंदुस्तान में 34735 नए अंग्रेजी कानून लागू किए। ताकि मंगल पांडे जैसा विद्रोह दोबारा कोई सैनिक ना कर सकें। तुरंत मंगल पांडे की शहादत ने देश में जो क्रांति के बीज बोए थे उसने अंग्रेजी हुकूमत को 100 साल के अंदर ही भारत से उखाड़ फेंक दिया।

गहरी नींद लें और स्वस्थ रहें

जागृती ब्यूरो

जिस तरह दिनभर काम करके रात में नींद से शरीर को आराम और ऊर्जा मिलती है ठीक उसी तरह नींद से शरीर के आंतरिक अंगों को भी आराम मिलता है, जिससे उसकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। इसलिए नींद बहुत जरूरी है। आमतौर पर माना जाता है कि छह से आठ घंटे की नींद काफी होती है। वहीं योग एवं

प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. राजेश बत्रा का कहना है कि इन छह से आठ घंटों में भी डेढ़ से चार घंटे नींद के ऐसे होते हैं जिसमें बहुत गहरी नींद होती है और वही नींद शरीर को स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सेहत

दिनभर सोने की आदत

कई लोगों को बार-बार या बेवक्त सोने की आदत होती है। ऐसा करना ठीक नहीं है और इस आदत को जितनी जल्द हो सके बदल देना चाहिए। कारण कि ऐसा करने से चयापचय दर प्रभावित होता है। चयापचय दर के बिगड़ने से शरीर में हॉर्मोन का असंतुलन होने लगता है, जिससे चिड़चिड़ापन, रक्त चाप, सिर में दर्द होने लगता है। साथ ही इससे न्यूरोसिस्टम और प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर पड़ने लगती है।

हल्की झपकी

जो लोग ज्यादा शारीरिक श्रम या फिर ज्यादा मानसिक कार्य करते हैं वे दोपहर में दस से बीस मिनट की हल्की झपकी ले सकते हैं। दस से बीस मिनट की झपकी से उनके शरीर को आराम मिलता है और शरीर की काम करने की क्षमता बढ़ जाती है। लेकिन लंबी नींद नहीं लेनी चाहिए।

ज्यादा नींद की समस्या

कहा जाता है कि किसी व्यक्ति का पेट उसकी बंद मुट्ठी के बराबर होता है इसलिए हमें हमेशा भूख से थोड़ा कम खाना चाहिए। लेकिन कई लोगों को ज्यादा खाने (ओवरइटिंग) की आदत होती है। ज्यादा खाने की वजह से ऐसे लोगों को ज्यादा नींद आती है और वे हर समय सुस्त नजर आते है। यही नहीं ज्यादा सोने से शरीर का वजन भी बढ़ जाता है। जिन लोगों की प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्युनिटी) बहुत कमजोर हो जाती है या जो लोग शारीरिक रूप से बहुत कमजोर होते हैं उनमें भी ज्यादा नींद की समस्या देखी गई है।

अच्छी नींद के लिए अच्छी आदत

नींद का संबंध हमारी आदतों से है। जैसी हम आदत विकसित करते हैं हमारा शरीर उसी तरह काम करने लगता है। मान लिजिए कि आपने छह घंटे की नींद की आदत डाली तो आपके लिए छह घंटे की नींद काफी है। अगर आपने दिन में सोने की आदत डाली तो शरीर दिन में सोना चाहेगा। ऐसे में अगर आप कभी नहीं सो पाते तो शरीर में 'भारीपन लगेगा, सिर में दर्द, उबकाई और मन चिड़चिड़ा हो सकता है।

देर तक जगने से लगती है भूख

कई लोगों को देर रात तक जगने और मध्य रात्रि में भी खाने की आदत होती है। कारण कि आयुर्वेद के अनुसार चार-चार घंटे के अंतराल पर पित्तकाल शुरू होता है। ऐसे में अगर कोई व्यक्ति देर रात तक जागता है या बारह बजे तक जागता है तो पित्तकाल शुरू हो जाता है और उसे भूख लग जाती है। मध्य रात्रि के बाद या रात में बार-बार खाने से नींद के साथ-साथ वजन भी प्रभावित होता है।

समय पर सोएं और समय पर जागें

अगर सोने के समय पर सोएंगे नहीं और जागने के समय पर सोते रहेंगे तो शरीर का पाचन तंत्र और प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती जाएंगी। यही नहीं इसका असर तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क के कार्य प्रणाली पर भी पड़ेगा। इसलिए समय पर सोना और समय पर जागना जरूरी है।

संतुलन बनाकर रखें

बहुत ज्यादा सोना ठीक नहीं है लेकिन बहुत कम सोना भी ठीक नहीं है। क्योंकि अगर हम सोएंगे नहीं और रात जाग कर ही बिता देंगे तो हमारे शरीर के आंतरिक अंगों की कार्य क्षमता पर असर पड़ेगा और वे असंतुलित हो जाएंगी। इससे शरीर में कई सारी बीमारी पैदा हो सकती हैं, इसलिए छह से आठ घंटे की नींद जरूर लें।

नींद की एक आदत है जरुरी

मेट्रों शहरों में कई लोग पाली यानी शिफ्ट में काम करते हैं। ऐसे लोगों को कभी दिन में तो कभी रात में काम करना पड़ता है जिससे उनकी नींद प्रभावित होती है। नींद की कोई एक आदत यानी रात को सोना है या फिर दिन को सोना है को विकसित नहीं कर सकने के कारण वे कई सारी शारीरिक व मानसिक समस्याएं के शिकार हो जाते हैं। देखा गया है कि नींद पूरी नहीं होने के कारण ऐसे लोगों में तनाव का स्तर काफी बढ़ जाता है। साथ ही उनकी पाचन शक्ति और प्रतिरक्षा प्रणाली भी कमजोर पड़ जाती है।

रात का खाना हो हल्का

नींद का एक संबंध हमारे खाने से भी है। अगर आप रात में पेट भर या ज्यादा खाते हैं तो हो सकता है कि आपको नींद ज्यादा आए या फिर आपकी नींद ही उड़ जाए। इसलिए रात में हमेशा हल्का खाएं जैसे कि सूप, दलिया या फिर सलाद।

अच्छी नींद के लिए पौष्टिक, संतुलित और प्राकृतिक आहार (कच्ची सब्जियां, फलों का रस, सब्जियों का रस और अंकुरित अनाज) लें। समय पर सोएं और समय पर जागें। योग, कसरत या फिर पार्क में सैर करें। अच्छी नींद के लिए किसी भी तरह की शारीरिक क्रिया का करना जरूरी है।

बच्चों में सर्दी-जुकाम से राहत पाने के लिए दिए गए उपाय सरल और प्रभावी हैं। आइए इन्हें संक्षेप में समझें:

जागृती ब्यूरो

सामान्य देखभाल और घरेलू नुस्खे:

1. सरसों के तेल की मालिश:

सरसों के तेल में लहसुन डालकर गर्म करें और हल्का ठंडा करके छाती और पीठ पर मालिश करें।

2. भाप लेना:

भाप से बलगम ढीला होता है और सांस लेने में आराम मिलता है।

3. गर्म तरल पदार्थ:

गर्म सूप, हल्दी वाला दूध, और गर्म पानी पीने से आराम मिलता है।

4. नमक के पानी के गरारे:

गले की खराश और संक्रमण के लिए उपयोगी।

सर्दियों में जरूरी सुपरफूड्स:

गाजर और आंवला: इम्यूनिटी बढ़ाने में सहायक।

गुड़: शरीर को गर्म रखने और खांसी में राहत देने के लिए।

अंडे: प्रोटीन और विटामिन डी के अच्छे स्रोत।

छाती में जमे कफ के लिए:

ह्यूमिडिफायर का उपयोग: कमरे में नमी बनाए रखने के लिए।

सोते समय ऊंचा तकिया: बेहतर सांस लेने में मदद।

गर्म सेक: छाती पर लगाने से कफ बाहर निकालने में मदद।

ध्यान देने योग्य बात:

शिशुओं को दवा देने से बचें और डॉक्टर की सलाह लें।

यदि लक्षण लंबे समय तक बने रहें या अधिक गंभीर हों, तो तुरंत विशेषज्ञ से संपर्क करें।

विटामिन डी युक्त आहार को नियमित रूप से शामिल करें।

यह उपाय प्राकृतिक हैं और सर्दी-जुकाम में राहत देने में कारगर साबित हो सकते हैं।

औली

रमेश सर्राफ धमोरा

औली, उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित, एक बेहद खूबसूरत हिल स्टेशन है जिसे "उत्तराखंड का स्वर्ग" और "भारत

का स्विट्जरलैंड" भी कहा जाता है। यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता, बर्फ से ढकी चोटियों और घने देवदार के जंगलों के लिए प्रसिद्ध है। औली में बर्फ से ढके पर्वतों की ऊंचाई लगभग 23,000 फीट तक जाती है, और यहां की ताजी ठंडी हवा में देवदार के वृक्षों की महक महसूस की जा सकती है।

औली की विशेषताएं

1. बर्फीले दृश्य: औली से नंदा देवी, दूनागिरी और कमेट पर्वतों का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है।

2. स्कीइंग का मुख्य केंद्र: औली में हर साल स्कीइंग महोत्सव आयोजित किया जाता है, और यह स्की प्रेमियों के लिए स्वर्ग के समान है। गढ़वाल मंडल विकास निगम (GMVN) और निजी संस्थानों द्वारा स्कीइंग की ट्रेनिंग दी जाती है।

3. रोपवे: औली-जोशीमठ रोपवे, भारत का दूसरा सबसे लंबा रोपवे, यहां का मुख्य आकर्षण है।

4. आर्टिफिशियल लेक: औली आर्टिफिशियल ताल, पर्यटकों के लिए एक और आकर्षण है।

घूमने का सबसे अच्छा समय

1. स्कीइंग के लिए: दिसंबर से मार्च के बीच बर्फबारी के दौरान औली का वातावरण स्कीइंग के लिए आदर्श होता है।

2. ट्रेकिंग और प्राकृतिक दृश्यों के लिए: अप्रैल से जून के दौरान यहां का मौसम बेहद सुखद होता है।

3. गर्मियों में सैर के लिए: यह समय ट्रेकिंग और अन्य एडवेंचर एक्टिविटीज के लिए भी उपयुक्त है।

औली कैसे पहुंचे?

1. सड़क मार्ग से: औली जोशीमठ से 14 किलोमीटर दूर है। दिल्ली से ऋषिकेश, हरिद्वार, और देहरादून होते हुए औली तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।

2. हवाई मार्ग से: निकटतम हवाई अड्डा जॉली ग्रांट (देहरादून) है, जो औली से 286 किलोमीटर दूर है।

3. रेल मार्ग से: निकटतम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश (264 किलोमीटर) और हरिद्वार हैं। वहां से टैक्सी और बस सेवाएं उपलब्ध हैं।

औली अपनी प्राकृतिक छटा, हिमालय की चोटियों, और रोमांचक गतिविधियों के लिए हर साल हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह स्थान न केवल एडवेंचर के शौकीनों के लिए बल्कि प्रकृति प्रेमियों के लिए भी एक आदर्श स्थल है।

गणतंत्र दिवस

जागृती ब्यूरो

26 जनवरी को मनाया जाने वाला भारतीय गणतंत्र दिवस वह दिन है, जब इसी दिन सन् 1950 में हमारे देश का संविधान प्रभाव में आया। गणतंत्र दिवस का दिन भारत के तीन राष्ट्रीय पर्वो में से एक है, यहीं कारण है कि इसे हर जाति तथा संप्रदाय द्वारा काफी सम्मान और उत्साह के साथ मनाया जाता है।

गणतंत्र दिवस मनाने का मुख्य कारण यह है कि इस दिन हमारे देश का संविधान प्रभाव में आया था। हालांकि इसके अलावा इस दिन का एक और इतिहास भी है, जोकि काफी रोचक है। इसकी शुरुआत दिसंबर 1929 में लाहौर में पंडित नेहरु के अध्यक्षता में संपन्न हुई भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन से हुई थी। जिसमें कांग्रेस द्वारा इस बात की घोषणा की गई की यदि 26 जनवरी 1930 तक भारत को स्वायत्त शासन द्धडोमीनियन स्टेटसक्ष नही प्रदान किया गया तो इसके बाद भारत अपने आप को पूर्णतः स्वतंत्र घोषित कर देगा, लेकिन जब यह दिन आया और अंग्रेजी सरकार द्वारा इस मुद्दे पर कोई जवाब नही दिया गया तो कांग्रेस ने उस दिन से पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य से अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ कर दिया। यहीं कारण है कि जब हमारा भारत देश आजाद हुआ तो 26 जनवरी के दिन के इस दिन संविधान स्थापना के लिए चुना गया।

गणतंत्र दिवस कोई साधरण दिन नही है, यह वह दिन है जब हमारे भारत देश को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई क्योंकि भले ही भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हो गया था, लेकिन यह पूर्ण रुप से स्वतंत्र तब हुआ जब 26 जनवरी 1950 के दिन 'भारत सरकार अधिनियम' को हटाकर भारत के नवनिर्मित संविधान को लागू किया गया। इसलिए उस दिन से 26 जनवरी के इस दिन को भारत में गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। यह भारत के तीन राष्ट्रीय पर्वो में से एक है इसके अलावा अन्य दो गांधी जयंती और स्वतंत्रता दिवस है। इस दिन पूरे देश भर में राष्ट्रीय अवकाश रहता है, यहीं कारण है कि विद्यालय तथा कार्यलय जैसे कई जगहों पर इसके कार्यक्रम को एक दिन पहले ही मनाया जाता है।

गणतंत्र दिवस से जुड़े कुछ रोचक तथ्य

इस दिन पहली बार 26 जनवरी 1930 में पूर्ण स्वराज का कार्यक्रम मनाया गया। जिसमें अंग्रेजी हुकूमत से पूर्ण आजादी के प्राप्ति का प्रण लिया गया था।

गणतंत्र दिवस परेड के दौरान एक क्रिश्चियन ध्वनि बजाई जाती है, जिसका नाम "अबाईड वीथ मी" है क्योंकि यह ध्वनि महात्म गांधी के प्रिय ध्वनियों में से एक है।

भारत के पहले गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो थे।

गणतंत्र दिवस समारोह का राजपथ में पहली बार आयोजन वर्ष 1955 में किया गया था।

भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान भारत के राष्ट्रपति को 31 तोपों की सलामी दी जाती है।

हर वर्ष 26 जनवरी को नई दिल्ली के राजपथ में गणतंत्र दिवस के इस कार्यक्रम को काफी भव्य रूप से मनाया जाता है। इसके साथ ही गणतंत्र दिवस के दिन किसी विशेष विदेशी अतिथि को आमंत्रित करने की भी प्रथा रही है, कई बार इसके अंतर्गत एक से अधिक अतिथियों को भी आमंत्रित किया जाता है। इस दिन सर्वप्रथम भारत के राष्ट्रपति द्वारा तिरंगा फहराया जाता है और इसके बाद वहां मौजूद सभी लोग सामूहिक रूप से खड़े होकर राष्ट्रगान गाते हैं।

इसके पश्चात कई तरह की सांस्कृतिक और पारंपरिक झांकिया निकाली जाती हैं, जो कि देखने में काफी मनमोहक होती हैं। इसके साथ ही इस दिन का सबसे विशेष कार्यक्रम परेड का होता है, जिसे देखने के लिए लोगों में काफी उत्साह होता है। इस परेड का आरंभ प्रधानमंत्री द्वारा राजपथ पर स्थित अमर जवान ज्योति पर पुष्प डालने के पश्चात होता है। इसमें भारतीय सेना के विभिन्न रेजीमेंट, वायुसेना तथा नौसेना द्वारा हिस्सा लिया जाता है।

यह वह कार्यक्रम होता है, जिसके द्वारा भारत अपने सामरिक तथा कूटनीतिक शक्ति का भी प्रदर्शन करता है और विश्व को यह संदेश देता है कि हम अपने रक्षा में सक्षम है। गणतंत्र दिवस समारोह में एक साथ कई सारे मुख्य अतिथियों को आमंत्रित किया जाता रहा है। इस कार्यक्रम में सभी आसियान देशों के के प्रमुखों को आमंत्रित किया। गणतंत्र दिवस समारोह का यह कार्यक्रम भारत की विदेश नीती के लिए भी काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस कार्यक्रम में आमंत्रित किये गये विभिन्न देशों के मुख्य अतिथियों के आगमन से भारत को इन देशों से संबंधों को बढ़ाने का मौका मिलता है।

गणतंत्र दिवस हमारे देश के तीन राष्ट्रीय पर्वो में से एक है, यह वह दिन है जो हमें हमारा गणतंत्र के महत्व का अहसास कराता है। यहीं कारण है कि इसे पूरे देश भर में इतने जोश तथा उत्साह के साथ मनाया जाता है। इसके साथ ही यह वह दिन भी है जब भारत अपने सामरिक शक्ति का प्रदर्शन करता है, जोकि किसी को आतंकित करने के लिए नही अपितु इस बात का संदेश देने के लिए होता है कि हम अपनी रक्षा करने में सक्षम है। 26 जनवरी के यह दिन हमारे देश के लिए एक ऐतहासिक पर्व है इसलिए हमें पूरे जोश तथा सम्मान के साथ इस पर्व को मनाना चाहिए।

रामानंद सागर: एक बहुमुखी प्रतिभा

जागृती ब्यूरो

रामानंद सागर अपनी कालजयी टेलीविज़न श्रृंखला "रामायण" के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसने 1987 में पूरे देश को मोहित कर लिया था। हालांकि, उन्हें "आरज़ू," "घूंघट," "ज़िंदगी," और "आंखें" जैसी फिल्मों के निर्माता-निर्देशक के रूप में व्यापक पहचान मिली, लेकिन अपने समय के प्रमुख उर्दू लेखकों में से एक के रूप में उनके योगदान को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। सागर ने सिनेमा, टेलीविज़न और साहित्य के क्षेत्र में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

रामानंद सागर का जन्म 29 दिसंबर 1917 को लाहौर के असल गुरुके गांव में एक सांस्कृतिक रूप से समृद्ध परिवार में हुआ था। उनके परदादा लाला शंकर दास चोपड़ा लाहौर से कश्मीर में आकर बसे थे। उनके दादा लाला गंगा राम श्रीनगर में एक सफल व्यापारी थे। सागर को उनकी नानी ने गोद लिया, जिनकी कोई संतान नहीं थी, और उनका नाम चंद्रमौली चोपड़ा से बदलकर रामानंद रखा गया। उनकी जैविक माँ के निधन के बाद, उनके पिता ने दूसरी शादी की, और सागर के कई सौतेले भाई-बहन हुए, जिनमें प्रसिद्ध फिल्म निर्माता विदु विनोद चोपड़ा भी शामिल हैं।

सागर का प्रारंभिक जीवन संघर्ष और धैर्य से भरा हुआ था। उन्होंने दिन में चपरासी, ट्रक क्लीनर, साबुन विक्रेता और सुनार के प्रशिक्षु के रूप में काम किया और रात में पढ़ाई की। 1942 में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत और फारसी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। अपनी पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने लघु कथाएँ, उपन्यास, कविताएँ और नाटक लिखना शुरू कर दिया था, जिनमें कई रचनाएँ उन्होंने छद्म नामों से लिखीं।

साहित्यिक और पत्रकारिता यात्रा

अपनी यात्रा की शुरुआत उन्होंने लाहौर के उर्दू दैनिक "डेली मिलाप" में एक पत्रकार के रूप में की और धीरे-धीरे संपादक के पद तक पहुंचे। 1941 में उन्हें टीबी जैसी गंभीर बीमारी का सामना करना पड़ा और उन्हें कश्मीर के एक सैनेटोरियम में भर्ती कराया गया। उस समय टीबी एक जानलेवा बीमारी थी और उनके बचने की संभावना बहुत कम थी।

इस कठिन समय में, उन्होंने उर्दू साहित्यिक पत्रिका "अदब-ए-मशरिक" के लिए लिखना शुरू किया। उनका कॉलम 'मौत के बिस्तर से' या 'डायरी ऑफ ए टीबी पेशेंट' उनके अनुभवों का मार्मिक वर्णन था।

देश-विभाजन और 'और इंसान मर गया'

1947-48 के भारत-पाक युद्ध के दौरान वे श्रीनगर में रह रहे थे। उन्होंने अपने परिवार को दिल्ली भेजा और अपने मुस्लिम मित्र के साथ वापस कश्मीर लौटकर ख्वाजा अहमद अब्बास, राजिंदर

पटकथा लिखकर उन्होंने बड़ी सफलता पाई। इसके बाद उन्होंने "आरज़ू," "आंखें," "गीत," "लालकार," "चारस," जैसी फिल्मों का निर्देशन और निर्माण किया।

टेलीविजन पर 'रामायण' का इतिहास

1987-88 में उन्होंने "रामायण" का निर्देशन किया, जो भारतीय टेलीविजन के इतिहास में सबसे प्रभावशाली कृतियों में से एक मानी जाती है। यह श्रृंखला एक सांस्कृतिक घटना बन गई और कई दर्शकों के रिकॉर्ड तोड़ दिए। उन्होंने "विक्रम और बेताल," "लव कुश," "श्री कृष्ण," और "अलिफ लैला" जैसी अन्य ऐतिहासिक श्रृंखलाओं का भी निर्देशन किया।

व्यक्तिगत जीवन और विरासत

रामानंद सागर ने लीलावती सागर से विवाह किया। उनके चार बेटे - सुभाष सागर, मोती सागर, प्रेम सागर, और आनंद सागर, और एक बेटी सरिता सागर हैं। उनके बेटे फिल्म और टेलीविजन उद्योग में सक्रिय हैं। उनकी पोती गंगा कडाकिया एक प्रसिद्ध चित्रकार हैं और उनके पोते शिव सागर ने उनके जीवन पर आधारित "एन एपिक लाइफ" पुस्तक के लिए शोध किया।

सिंह बेदी और अन्य साहित्यकारों के साथ युद्ध क्षेत्र में मानवीय सहायता प्रदान की।

इसी समय उन्होंने अपने प्रसिद्ध उपन्यास "और इंसान मर गया" को पूरा किया। यह उपन्यास विभाजन की त्रासदी, हिंसा और घृणा पर आधारित है। उन्होंने लिखा, "मुझे इस उपन्यास के माध्यम से घृणा जगानी है ताकि आपकी भावनाएँ और भी दृढ़ और स्थिर हो सकें। यदि मैंने आपको इन हत्याओं, बलात्कारों और हिंसा से घृणा करना सिखाया है, तो मैं इसे अपनी सफलता मानूंगा।"

इस उपन्यास को प्रो. इश्तियाक अहमद ने "विभाजन पर सबसे मानवीय और राजनीतिक रूप से तटस्थ उपन्यास" बताया।

फिल्म उद्योग की यात्रा

साहित्य छोड़ने का मुख्य कारण उनकी आर्थिक स्थिति थी। उन्होंने लिखा, "मेरे अंदर बहुत कुछ है जो लिखकर बाहर लाना चाहता हूं, लेकिन फिलहाल मुझे पेट भरने की चिंता अपनी आत्मा और बुद्धि को पोषण देने से अधिक सताती है।"

1949 में वे बंबई (अब मुंबई) चले गए। फिल्म उद्योग में उनकी शुरुआत 1932 में एक मूक फिल्म "रेडर्स ऑफ द रेलरोड" में क्लैपर बॉय के रूप में हुई। बाद में उन्होंने पृथ्वीराज कपूर के पृथ्वी थियेटर्स में सहायक स्टेज मैनेजर के रूप में काम किया।

1949 में राज कपूर की सुपरहिट फिल्म "बरसात" की कहानी और

ऐसे बहुत से शायर हैं, जिनका दूसरा मिसरा इतना मशहूर हुआ कि लोग पहले मिसरे को तो भूल ही गये। ऐसे ही चन्द उदाहरण यहाँ पेश हैं

जागृती ब्यूरो

"ऐ सनम वस्ल की तदबीरों से क्या होता है,
वही होता है जो मंज़ूर-ए-ख़ुदा होता है।"

- मिर्ज़ा रज़ा बर्क़

"भाँप ही लेंगे इशारा सर-ए-महफ़िल जो किया,
ताड़ने वाले क़यामत की नज़र रखते हैं।"

- माधव राम जौहर

"चल साथ कि हसरत दिल-ए-मरहूम से निकले,
आशिक़ का जनाज़ा है, ज़रा धूम से निकले।"

- मिर्ज़ा मोहम्मद अली फिदवी

"दिल के फफूले जल उठे सीने के दाग़ से,
इस घर को आग लग गई,घर के ही चराग़ से।"

- महताब राय ताबां

"ईद का दिन है, गले आज तो मिल ले ज़ालिम,
रस्म-ए-दुनिया भी है,मौक़ा भी है, दस्तूर भी है।"

- क़मर बदायुनी

"क़ैस जंगल में अकेला ही मुझे जाने दो,
ख़ूब गुज़रेगी, जो मिल बैठेंगे दीवाने दो।"

- मियाँ दाद ख़ां सय्याह

'मीर' अमदन भी कोई मरता है,
जान है तो जहान है प्यारे।"

- मीर तक़ी मीर

"शब को मय ख़ूब पी, सुबह को तौबा कर ली,
रिंद के रिंद रहे हाथ से जन्नत न गई।"

- जलील मानिकपूरी

"शहर में अपने ये लैला ने मुनादी कर दी,
कोई पत्थर से न मारे मेरे दीवाने को।"

- शैख़ तुराब अली क़लंदर काकोरवी

"ये जब्र भी देखा है तारीख़ की नज़रों ने,
लम्हों ने ख़ता की थी, सदियों ने सज़ा पाई।"

- मुज़फ़्फ़र रज़्मी

– आपको मैगज़ीन का कौन सा भाग सबसे अच्छा लगता है?
– इसे और बेहतर बनाने के लिए आपके पास क्या सुझाव हैं?
– कृप्या अपने सुझाव निम्न लिखित पते अनुसार भेजें।

विकास जागृति,
कमरा न. 1, पांचवीं मंजिल, पंजाब सिविल सचिवालय, चण्डीगढ़–160001
दूरभाष न.: 0172 2740668

पाठकों को निवेदन है कि वह विकास जागृति हेतु अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं ही भेजने का कष्ट करें।
या आप हमें **punmagazine2020@gmail.com** पर ईमेल भी कर सकते हैं।

पलटू की शैतानियां

चंपक वन में रहनेवाले पलटू बंदर की शैतानियों से सभी जानवर तंग आ चुके थे। वह जब चाहता किसी को परेशान कर देता था, किसी को चिढ़ा देता, किसी का मजाक बना देता। जंगल के सभी जानवर उसे समझाते, पर उसकी शैतानियां बढ़ती ही जा रही थीं।

एक दिन गणित के अध्यापक भोलू भालू ने किसी बात पर उसे डांटा तो उसने उनका मजाक बना दिया। दूसरे दिन वे कक्षा में पढ़ाने आए, तो उनकी टेबल–कुर्सी पर कोंच फली रगड़ डाली, जिससे उनके पूरे शरीर पर खुजली होने लगी। एक दिन रानी बंदरिया की पूंछ चुपके से स्टूल से बांध दी।जैसे ही रानी उठकर जाने लगी स्टूल भी उसके साथ घिसटने लगा। सारी कक्षा के छात्र ठहाका मार कर हंस पड़े। उस दिन तो पलटू ने गजब ही कर दिया। जम्बू जिराफ का जन्म दिन था। वह कक्षा में बांटने के लिए टफियां लाया था। पलटू को किसी तरह से पता चल गया।जब जम्बू ने टफियां बांटने के लिए अपना टिफिन खोला, तो उसमें टफियों की बजाय दो मेंढक निकले। पूरी कक्षा में जम्बू का मजाक बनगया। वह संगीत अध्यापक को भी सूरदास कहकर चिढ़ाता था, जबकि सभी छात्र उनका आदर करते थे।ऐसा नहीं था कि पलटू स्कूल में ही अपने साथियों को परेशान करता था, बल्कि जब वह घर पर रहता था, तब भी पड़ोसियों को परेशान करता था। न वह किसी की उम्र का लिहाज करता था और न ही उसे इस बात की परवाह रहती थी कि लोग उसके बारे में क्या कहेंगे या उसकी इन हरकतों से सामने वाले को कितनी ठेस पहुंचेगी। पेड़ के नीचे बैठकर काली भैंस सुस्ताती तो पलटू उसकी पूंछ के बाल ही कुतर डालता। मोनू कबूतर का मेहनत से बनाया घोंसला भी उसने तोड़ डाला। आज स्कूल से लौटते वक्त रास्ते में लम्बू जिराफ उसे मिला। वह लंगड़ा कर चलता था। पलटू ने अपनी आदत के मुताबिक उसे भी लंगड़ू–लंगड़ू कह कर चिढ़ाया। जिराफ उसे समझाने के लिए बैसाखियों के सहारे तेजी से उसकी ओर बढ़ा। पलटू ने सोचा कि शायद वह उसकी पिटाई करने के उसकी तरफ आ रहा है। उसने आव देखा न ताव, झट से सड़क के दूसरे किनारे की ओर छलांग लगा दी।

अचानक पलटू एक कार की चपेट में आ गया। जंगल के जानवरों की भीड़ चारों ओर एकत्रित हो गई। इतने में लंगड़ाता हुआ जिराफ भी वहां आ गया। पलटू को बेहोश देखकर उसे बहुत दुख हुआ। उसने चालक से निवेदन किया कि वह पलटू को अस्पताल तक पहुंचा दे। वह स्वयं भी साथ गया। वहां मालूम हुआ कि उसके दाएं पैर की हड्डी टूट गई है। कुछ अन्य जगहों पर चोटें भी आई हैं। खून बहुत बह गया था।

ऑपरेशन के लिए लम्बू जिराफ ने ही अपना खून दिया। डॉ. भालूराम, पूसी बिल्ली ने ऑपरेशन किया। लम्बू ने उसकी स्कूल डायरी से पता देखकर उसके घर सूचना भिजवाई। कुछ देर बाद पलटू के माता–पिता भी वहां आ पहुंचे। शाम तक पलटू को होश आ गया। सबके साथ लम्बू जिराफ को भी वहां देखकर वह डर गया। उसके पिता व डॉक्टर ने उसे बताया कि यदि आज लम्बू न होता, तो तुम्हारा बचना असम्भव था।

यह सुनकर पलटू की आंखों में आंसू आ गए। पटलू बंदर ने हाथ जोड़कर लम्बू जिराफ से माफी मांगी। लम्बू ने पलटू के सिर पर हाथ फेराते हुए उसे माफ कर दिया। पलटू ने मन ही मन दृढ़ निश्चय किया कि अब आगे से वह किसी को कभी नहीं परेशान करेगा।

राजकुमार जैन

पंजाब सरकार अब सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध है

पंजाब सरकार ने राज्य सरकार और पंजाब के लोगों के बीच एक उत्साहपूर्ण दोतरफा संचार की सुविधा के प्रयास में सोशल मीडिया की दुनिया में कदम रखा है।

'एवरीथिंग पंजाब' आधारित एक तथ्यपूर्ण खाते हेतु ताज़ा घटनाओं, समाचारों, नीतियों, योजनाओं और पहलकदमियों संबंधी नियमित रीयल–टाइम अपडेट के लिए फेसबुक, ट्विटर, वर्डप्रेस और यूट्यूब पर हमारे ऑनलाइन परिवार का हिस्सा बनें।

#PunjabGovtIndia से जुड़ें और सोशल मीडिया पर उपलब्ध निम्नलिखित खातों के आधिकारिक पेजों पर लाइक/कमेंट/शेयर करें:

Facebook.com/PunjabGovtIndia

x.com/pbgovtindia

Punjabgovtindia.wordpress.com

Youtube.com/c/PunjabGovtIndia

आप किसी भी जानकारी या सुझाव के लिए हमें **pbgovt.socialmedia@gmail.com** पर ई–मेल भी कर सकते हैं।

आप पंजाब एडवांस (अंग्रेजी), विकास जागृति (पंजाबी), विकास जागृति (हिंदी) की मासिक ई–पत्रिकाएं भी डाउनलोड कर सकते हैं।

और

खाते व राज्य की विकास संबंधी पहलकदमियों/योजनाओं की विस्तृत जानकारी के लिए निम्नलिखित वेबसाइटों पर भी जा सकते हैं: **ipr.punjab.gov.in**

आपका सुझाव हमारे लिए बेहद कीमती है। पत्रिकाओं संबंधी आप अपने विचार **feedbackpunmedia@gmail.com** पर साझा कर सकते हैं।

आपके उत्तर की प्रतीक्षा में

ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ

GOVT. OF PUNJAB

पंजाब सरकार

2025

ਸਾਕਾ 1946-47 | SAKA 1946-47

RNI No. CHAHIN/2013/53326
MBU Chd.
A Monthly Magazine

ਜਨਵਰੀ JANUARY जनवरी

ਪੋਹ-ਮਾਘ

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਫ਼ਰਵਰੀ FEBRUARY फ़रवरी

ਮਾਘ-ਫੱਗਣ

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਮਾਰਚ MARCH मार्च

ਫੱਗਣ-ਚੇਤ

S	M	T	W	T	F	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਅਪ੍ਰੈਲ APRIL अप्रैल

ਚੇਤ-ਵੈਸਾਖ

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਮਈ MAY मई

ਵੈਸਾਖ-ਜੇਠ

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਜੂਨ JUNE जून

ਜੇਠ-ਹਾੜ

S	M	T	W	T	F	S
29	30					
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਜੁਲਾਈ JULY जुलाई

ਹਾੜ-ਸਾਵਣ

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	
13	14	15	16	17	18	
20	21	22	23	24	25	
27	28	29	30	31		
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	

ਅਗਸਤ AUGUST

ਸਾਵਣ-ਭਾਦੋਂ

S	M	T	W	T	F	
31					1	
3	4	5	6	7	8	
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਸਤੰਬਰ SEPTEMBER सितम्बर

ਭਾਦੋਂ-ਅੱਸੂ

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਅਕਤੂਬਰ OCTOBER अक्टूबर

ਅੱਸੂ-ਕੱਤਕ

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਨਵੰਬਰ NOVEMBER नवंबर

ਕੱਤਕ-ਮੱਘਰ

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਦਸੰਬਰ DECEMBER दिसंबर

ਮੱਘਰ-ਪੋਹ

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			
ਐਤ	ਸੋਮ	ਮੰਗਲ	ਬੁੱਧ	ਵੀਰ	ਸ਼ੁੱਕਰ	ਸ਼ਨੀ

ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਛੁੱਟੀਆਂ PUNJAB GOVERNMENT HOLIDAYS

ਜਨਮ ਦਿਹਾੜਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ	06 ਜਨਵਰੀ	ਸੋਮਵਾਰ
Birthday of Sri Guru Gobind Singh Ji	06th January	Monday
ਗਣਤੰਤਰ ਦਿਵਸ	26 ਜਨਵਰੀ	ਐਤਵਾਰ
Republic Day	26th January	Sunday
ਜਨਮ ਦਿਹਾੜਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ	12 ਫ਼ਰਵਰੀ	ਬੁੱਧਵਾਰ
Birthday of Sri Guru Ravidas Ji	12th February	Wednesday
ਮਹਾ ਸ਼ਿਵਰਾਤਰੀ	26 ਫ਼ਰਵਰੀ	ਬੁੱਧਵਾਰ
Maha Shivaratri	26th February	Wednesday
ਹੋਲੀ	14 ਮਾਰਚ	ਸ਼ੁੱਕਰਵਾਰ
Holi	14th March	Friday
ਸ਼ਹੀਦੀ ਦਿਵਸ ਸ਼ਹੀਦ-ਏ-ਆਜ਼ਮ ਭਗਤ ਸਿੰਘ, ਸੁਖਦੇਵ ਅਤੇ ਰਾਜਗੁਰੂ ਜੀ	23 ਮਾਰਚ	ਐਤਵਾਰ
Shaheedi Diwas of Shaheed-e-Azam Bhagat Singh, Sukhdev & Rajguru Ji	23rd March	Sunday
ਈਦ-ਉੱਲ-ਫ਼ਿਤਰ	31 ਮਾਰਚ	ਸੋਮਵਾਰ
Eid-Ul-Fitr	31st March	Monday
ਰਾਮ ਨੌਮੀ	06 ਅਪ੍ਰੈਲ	ਐਤਵਾਰ
Ram Navami	06th April	Sunday
ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਭਾ ਦਾਸ ਜੀ	08 ਅਪ੍ਰੈਲ	ਮੰਗਲਵਾਰ
Birthday of Sri Guru Nabha Dass Ji	08th April	Tuesday
ਮਹਾਂਵੀਰ ਜੈਯੰਤੀ	10 ਅਪ੍ਰੈਲ	ਵੀਰਵਾਰ
Mahavir Jayanti	10th April	Thursday
ਵਿਸਾਖੀ	13 ਅਪ੍ਰੈਲ	ਐਤਵਾਰ
Vaisakhi	13th April	Sunday
ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਡਾ. ਬੀ.ਆਰ. ਅੰਬੇਡਕਰ	14 ਅਪ੍ਰੈਲ	ਸੋਮਵਾਰ
Birthday of Dr. B.R. Ambedkar	14th April	Monday
ਗੁੱਡ ਫਰਾਈਡੇ	18 ਅਪ੍ਰੈਲ	ਸ਼ੁੱਕਰਵਾਰ
Good Friday	18th April	Friday
ਭਗਵਾਨ ਪਰਸ਼ੂ ਰਾਮ ਜੈਯੰਤੀ	29 ਅਪ੍ਰੈਲ	ਮੰਗਲਵਾਰ
Lord Parshu Ram Jayanti	29th April	Tuesday
ਮਈ ਦਿਵਸ	01 ਮਈ	ਵੀਰਵਾਰ
May Day	01st May	Thursday
ਸ਼ਹੀਦੀ ਦਿਵਸ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ	30 ਮਈ	ਸ਼ੁੱਕਰਵਾਰ
Martyrdom Day of Sri Guru Arjun Dev Ji	30th May	Friday
ਈਦ-ਉੱਲ-ਜ਼ੂਹਾ (ਬਕਰੀਦ)	07 ਜੂਨ	ਸ਼ਨਿੱਚਰਵਾਰ
Eid-Ul-Zuha (Bakrid)	07th June	Saturday
ਕਬੀਰ ਜੈਯੰਤੀ	11 ਜੂਨ	ਬੁੱਧਵਾਰ
Kabir Jayanti	11th June	Wednesday
ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਦਿਵਸ	15 ਅਗਸਤ	ਸ਼ੁੱਕਰਵਾਰ
Independence Day	15th August	Friday
ਜਨਮ ਅਸ਼ਟਮੀ	16 ਅਗਸਤ	ਸ਼ਨਿੱਚਰਵਾਰ
Janam Ashtami	16th August	Saturday
ਮਹਾਰਾਜ ਅਗਰਸੈਨ ਜੈਯੰਤੀ	22 ਸਤੰਬਰ	ਸੋਮਵਾਰ
Maharaj Agarsain Jayanti	22nd September	Monday
ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਮਹਾਤਮਾ ਗਾਂਧੀ ਜੀ	02 ਅਕਤੂਬਰ	ਵੀਰਵਾਰ
Birthday of Mahatma Gandhi Ji	02nd October	Thursday
ਦੁਸਹਿਰਾ	02 ਅਕਤੂਬਰ	ਵੀਰਵਾਰ
Dussehra	02nd October	Thursday
ਜਨਮ ਦਿਹਾੜਾ ਮਹਾਰਿਸ਼ੀ ਵਾਲਮੀਕਿ ਜੀ	07 ਅਕਤੂਬਰ	ਮੰਗਲਵਾਰ
Birthday of Maharishi Valmiki Ji	07th October	Tuesday
ਦੀਵਾਲੀ	20 ਅਕਤੂਬਰ	ਸੋਮਵਾਰ
Diwali	20th October	Monday
ਵਿਸ਼ਵਕਰਮਾ ਦਿਵਸ	22 ਅਕਤੂਬਰ	ਬੁੱਧਵਾਰ
Vishwakarma Day	22nd October	Wednesday
ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪੁਰਬ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ	05 ਨਵੰਬਰ	ਬੁੱਧਵਾਰ
Birthday of Sri Guru Nanak Dev Ji	05th November	Wednesday
ਸ਼ਹੀਦੀ ਦਿਹਾੜਾ ਸ. ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ਸਰਾਭਾ ਜੀ	16 ਨਵੰਬਰ	ਐਤਵਾਰ
Martyrdom Day of S. Kartar Singh Sarabha Ji	16th November	Sunday
ਸ਼ਹੀਦੀ ਦਿਹਾੜਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ	25 ਨਵੰਬਰ	ਮੰਗਲਵਾਰ
Martyrdom Day of Sri Guru Tegh Bahadur Ji	25th November	Tuesday
ਕ੍ਰਿਸਮਿਸ ਦਿਵਸ	25 ਦਸੰਬਰ	ਵੀਰਵਾਰ
Christmas Day	25th December	Thursday
ਸ਼ਹੀਦੀ ਸਭਾ, ਸ੍ਰੀ ਫਤਿਹਗੜ੍ਹ ਸਾਹਿਬ	27 ਦਸੰਬਰ	ਸ਼ਨਿੱਚਰਵਾਰ
Shaheedi Sabha, Sri Fatehgarh Sahib	27th December	Saturday

ਸਾਰੇ ਸ਼ਨਿੱਚਰਵਾਰ ਅਤੇ ਸਾਰੇ ਐਤਵਾਰ All Saturdays and All Sundays

○ ਪੂਰਨਮਾਸ਼ੀ ★ ਸੰਗਰਾਂਦ ● ਮੱਸਿਆ

Designed by: Information and Public Relations, Punjab

Printed by: Controller, Printing & Stationery, Punjab at Govt. Press, S.A.S. Nagar